सम्पादक

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सहायक

मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,

लखनऊ – 226007

फोन : 0522–2740406

फैक्स : 0522–2741221

E-mail : nadwa@sancharnet.in

nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक) 30 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग

लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

जुलाई, 2015 वर्ष 14 अंक 05

अल्लाहु अक्बर

अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर
अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर
निश्चय ही अल्लाह सबसे बड़ा है
अल्लाह बड़ा है अल्लाह बड़ा है
पूज्य नहीं कोई उसके अतिरिक्त
अल्लाह तआ़ला सबसे बड़ा है
सर्व गुणों का वही पात्र है
अल्लाह बड़ा है अल्लाह बड़ा है
प्यारे मुहम्मद नबी हैं उसके
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
आज्ञा पालन करें सब उन का
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा ....मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी 3

प्यारे नबी की प्यारी बातें.........................अमतुल्लाह तस्नीम 4

ईद मुबारक ....डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी 6

जगनायक ....हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी 8

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में ......हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0 11

एक गैर मुस्लिम नव युवक...................इदारा 13

रोज़ा और ईदुल फित्र..............................हरजत मौ0सै0 मु0 राबे हसनी नदवी 15

यज़ीदियों (एजदियों) ....शकील शम्सी 21

आपके प्रश्नों के उत्तर.............................मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी 28

हिन्दी लिपि में उर्दू.................................इदारा 32

अमरीका के सद्र बराक ओबामा 33

अज़ान (बांग)...इदारा 34

हो मुबारक ईद...इदारा 36

खुद को बड़ा दिखाने ....रमेश भाई ओझा 37

शिष्टाचार..इदारा 38

उर्दू सीखिए ....इदारा 40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकरः

अनुवाद– जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में रात को और दिन को छुपा कर और खुल्लम खुल्ला खर्च करते हैं तो उनके लिए उनका अपने रब के पास सवाब है, और न डर है उन पर और न वह गमगीन होंगे[(1)(274)], जो लोग सूद खाते हैं नहीं उठेंगे कियामत को मगर जिस प्रकार उठता है वह आदमी कि जिसके होशो हवास खो दिये हों जिन्न ने लिपट कर, यह हालत उनकी इस वास्ते होगीकि उन्होंने कहा कि सौदागरी भी तो ऐसी ही है जैसे सूद लेना, जबकि अल्लाह ने हलाल किया है सौदागरी को और हराम किया है सूद को[(2)], फिर जिसको अपने रब की तरफ से नसीहत पहुंची और वह बाज़ आ गया तो उसके वास्ते है जो पहले हो चुका, और मामला उसका अल्लाह के हवाले है, और जो फिर सूद ले, तो वही लोग हैं दोजख वाले यह उसमे हमेशा रहेंगे[(3)(275)]।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. यहाँ तक खैरात और उसकी फज़ीलत और उसकी शर्तों का जिक्र चल रहा था, और चूंकि खैरात करने से इधर तो मुआमलात में सहूलत की आदत होती है और अशीलता व कठोर पने की बुराई दिल में बैठ जाती है और उधर यह होता है कि मुआमलात व आमाल में जो गुनाह हो जाता है खैरात से उसका कफ्फारा कर दिया जाता है और खैरात करने से अखलाको मुरव्वत, दूर अंदेशी और अल्लाह की मख्लूक को लाभ पहुंचाने के भाव में प्रगति भी होती है, इन्हीं कारणों से इन विभिन्न आयतों में उसका जिक्र फरमाया गया था, अब सूद लेने का जिक्र आ रहा है क्योंकि यह खैरात के विपरीत है खैरात से मुरव्वत व लाभ पहुंचाने का भाव पैदा होता है तो सूद से बे मुरव्वती, जुल्म, नुकसान पहुंचाने के भाव में प्रगति होती है इसलिए खैरात की फजीलत के बाद सूद की बुराई और उसकी निषेधा का जिक्र बहुत अनुकूल है और जिस कद्र खैरात में भलाई है उतनी ही सूद में बुराई होनी जरूरी बात है।

2. यानी सूद खाने वाले कियामत में कब्रों से ऐसे उठेंगे जैसे आसेबज़दा और मजनून, और यह हालत इस वास्ते होगी कि इन्होंने हलाल तिजारत व हराम सूद को बराबर कर दिया, और सिर्फ इस कारण की दोनों में लाभ मकसूद होता है दोनों को हलाल कहा हालांकि तिजारत और सूद में बड़ा फर्क है कि तिजारत को अल्लाह तआला ने हलाल किया और सूद को हराम।

फाइदा:–

यह लोग तिजारत को सूद के समान करार देते हैं जबकि अल्लाह तआला के हुक्म से इन दोनों में जमीन व आसमान का फर्क है, कि

शेष पृष्ठ ....05.... पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

रोज़े का अल्लाह के यहां दर्जा-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि आदमी का हर अमल उसके लिए है और रोज़ा खास मेरे लिए है, मैं उसका बदला दूंगा और रोज़े ढाल हैं। अगर तुममें से कोई रोजे से हो तो न अशलील बके, न बेहूदा गोई करे, न झगड़ा करे अगर कोई उसको गाली भी दे या झगड़ा करने पर आमादा हो जाये तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं, और क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है कि रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह को मुश्क से जियादा पसंद है और फरमाया कि रोजेदार को दो खुशियां हासिल होती हैं एक इफ्तार के समय जब कि वह रोज़ा खोलता है, दूसरी खुशी कियामत के दिन होगी जब वह अपने रब से मिलेगा और अपने रोज़े का बदला देखेगा। (बुखारी—मुस्लिम)

रोज़े की रूह-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स रमजान में अज्र व सवाब और ईमान की खातिर रोज़े रखेगा तो उसके तमाम पिछले गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।

(बुखारी—मुस्लिम)

रमज़ान की पहली रात-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रमज़ानुल मुबारक की पहली रात को जहन्नम के दरवाजे बंद कर दिये जाते हैं और शैतानों को बांध दिया जाता है। (बुखारी—मुस्लिम)

सेहरी खाने की फजीलत-

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सेहरी खाया करो, सेहरी में बरकत होती है।

(बुखारी—मुस्लिम)

हजरत अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हमारे रोज़ों को अह्ले किताब के रोज़ों पर जो फज़ीलत हासिल है वह सेहरी की वजेह से है। (मुस्लिम)

इफ़्तार का बयान-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला को वह बंदे बहुत महबूब हैं जो इफ़्तार में जल्दी करते हैं। (तिर्मिजी)

हजरत सहल बिन सअ़द रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया लोग उस समय तक भलाई में रहेंगे जब तक इफ़्तार में जल्दी करेंगे। (मुस्लिम)

खजूर से इफ़्तार–

हज़रत सलमान बिन आमिर ज़िब्बी सहाबी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया खजूर से इफ्तार करो अगर खजूर न मिले तो पानी से रोजा खोलो, पानी से इसलिए कि वह पाक करने वाला है।

(अबू दाऊद–तिर्मिजी)

हजरत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ से पहले इफ्तार कर लेते थे और ताज़े खजूर से इफ्तार फरमाते थे। अगर ताज़े खजूर न मिलते तो सूखे खजूर यानी छोहारे से रोजा खोलते थे और अगर यह भी न होते थे तो चंद घूंट पानी से रोज़ा इफ्तार फरमाते थे।

(अबू दाऊद–तिर्मिजी)

रोज़ेदार को ज़बान की हिफाजत का हुक्म–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रोज़ेदार को चाहिए कि रोज़े के दिन बेहयाई का काम न करे, न शोर करे, और अगर कोई उसको गाली दे या लड़ना चाहे तो कह दे कि मैं रोज़ेदार हूं।

(बुखारी–मुस्लिम)

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस शख़्स ने झूठ बोलना और झूठी बात पर अमल करना न छोड़ा तो उसके खाना पानी छोड़ने की अल्लाह को कोई जरूरत नहीं। (बुखारी)

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा.........

अल्लाह ने एक को हलाल कहा है और दूसरे यानी सूद को हराम, फिर दोनों बराबर कैसे हो सकते हैं। अल्लाह तआला ही हर चीज़ का हाकिम है वह ही हर चीज के नफा नुकसान और भलेबुरे से पूरी तरह बाखबर है जब उसने एक को हलाल और दूसरे को हराम करार दे दिया, तो समझ लो कि जिस चीज को हराम किया है उसमें ज़रूर कोई नुकसान और कोई बुराई है, चाहे आम इन्सान इसको महसूर करें या न करें।

3. यानी सूद की हुरमत से पहले जो तुमने सूद लिया दुन्या में उसको मालिक की तरफ वापस करने का हुक्म नहीं दिया जाता, यानी अब किसी को उससे मुतालबे का हक नहीं और आखिरत में अल्लाह को इख्तियार है चाहे अपनी रहमत से उसको बख्श दे, लेकिन हुरमत के बाद भी अगर कोई बाज़ न आया और बराबर सूद लेता रहातो वह दोजखी है और खुदा के हुक्म के सामने अपनी अक़्ली दलीलों को पेश करने की सज़ा वही है जो फरमाई।

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

ईद मुबारक

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

मग़रिब की नमाज़ हो चुकी है, छोटे बच्चे दौड़ दौड़ कर अपने बड़ों को सलाम कर रहे हैं, अगरचि बड़े, बच्चों से ज़ियादा जानते हैं फिर भी बच्चे अपने बड़ों से कह रहे हैं चाँद दिख गया ईद मुबारक, बड़े उन बच्चों की इस ख़बर पर खुशी का इज़हार कर रहे हैं और अपने छोटों के सलाम का जवाब दे कर दुआएं दे रहे हैं दिन में उनतीस्वां रोज़ा था। तभी तो चांद की बड़ी अहम्मीयत है अन्यथा तीस के चाँद की कौन किस को ख़बर देता है, ईद तो दोनों सूरतों में खुशी का दिन है चाहे चाँद 29 का हो या 30 का लेकिन 29 के चाँद पर बच्चे बूढ़े सभी की खुशी बढ़ जाती है। 29 का चाँद हो या 30 का एतिकाफ़ वाले खुश नसीबों का एतिकाफ़ मुकम्मल हो गया, अब वह मस्जिद से निकल कर घर आएंगे और ईद की तैयारियों का जाइज़ा लेंगे, छोटे बच्चों को उनकी माएं उनके कपड़े और जूते दिखा रही हैं।

सुब्हे सादिक के होते ही लोग उठ गये हैं, फज्र की नमाज़ अव्वल वक्त अदा कर के ईद की नमाज़ की तैयारी कर रहे हैं, औरतें सिवय्यां तैयार कर रही हैं, कुछ नमकीन का नज़्म भी कर रही हैं बच्चे बूढ़े सभी नहा धो रहे हैं, एहतिमाम से मिस्वाक भी कर रहे हैं, हस्ब हैसियत व तौफ़ीक़ अच्छे कपड़े पहन कर खुशबू लगाई है, छोटे अपने बड़ों से ईदियाँ ले रहे हैं, ग़रीब यतीम बच्चे और दूसरे गरीब लोग भी आज खुश हैं इस लिए कि दौलत मंदों ने अपनी जकात और सद—कए—फित्र उन तक रमज़ान ही में चुपके से पहुंचा दिया है, उन गरीबों को भी अल्लाह के फ़ज़्ल से ईद के रोज़ तंगी नहीं है।

अब सब सिवय्यां या कोई मीठी चीज़ खा कर ईद की नमाज़ अदा करने को निकल रहे हैं आम तौर से यह नमाज़ ईद गाहों में अदा की जाती है, ज़रूरत पर बाज मस्जिदों में भी ईद की नमाज़ होती है, हर शख़्स पहले से तै किये हुए है कि वह ईद की नमाज़ कहां अदा करेगा, अपने मंसूबे और इरादे के मुताबिक़ हर शख़्स अपने समझ रखने वाले बच्चों के साथ नमाज़ के लिए निकल रहा है और आहिस्ता आहिस्ता "अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, ला इलाह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द" पढ़ते हुए ईदगाह जा रहा है, ईद गाह या जहां भी उसे ईद की नमाज़ पढ़ना है पहुंच कर अपने बच्चों को मुनासिब जगह बिठा कर नमाज़ का इन्तिजार कर रहा है।

ईद की नमाज़ के लिए न अज़ान कही जाती है न इक़ामत लेकिन जहाँ—जहाँ ईद की नमाज़ होती है आमतौर से नमाज़ के वक़्त का एलान होता है, लोग कोशिश करके ईदगाह जल्द पहुंचते हैं ताकि मुनासिब जगह मिल जाए, नमाज़ के मुकर्ररह वक्त से पहले इमाम या कोई और दीन से वाक़िफ़ शख़्स तक़रीर करता है।

और लोगों को अपनी ज़िन्दगी में दीन लाने और दीनी कामों में तआउन (सहयोग) करने की तरग़ीब देता है, और आखिर में नमाज़ का तरीक़ा बताया जाता है इसलिए कि यह नमाज़ साल में दो ही बार पढ़ी जाती है अतः इसके पढ़ने का तरीक़ा और उसके बाद की कुछ ज़रूरी बातें इस तरह बताई जाती हैं–

भाइयो! दिल में नीयत करो कि ईद की नमाज़ इस इमाम के पीछे पढ़ रहे हैं और चाहो तो ज़बान से कह लो कि "नीयत करता हूँ दो रकअत नमाज़ ईदुल फित्र की वाजिब मये ज़ाइद छः तकबीरों के वास्ते अल्लाह तआला के, पीछे इस इमाम के, मुँह मेरा तरफ काबे शरीफ के" नीयत के अलफ़ाज़ बहुत से अनपढ़ भाइयों के लिए ज़बान से अदा करना मुशकिल है इसलिए दिल में यह सोच लेना कि ईद की नमाज़ पढ़ने की नीयत करता हूँ, इमाम के पीछे यह सोच कर दोनों हाथ कानों तक उठाएं और अल्लाहु अक्बर कह कर हाथ बाँध लें, इस अल्लाहु अक्बर को तकबीरे तहरीमा कहते हैं, इसका ज़बान से कहना ज़रूरी है, अब आप सना पढ़ें, अब इमाम अल्लाहु अक्बर कहते हुए कानों तक हाथ ले जाकर हाथ सीधे छोड़ देगा आप भी ऐसा ही करें, फिर इमाम दूसरी तक्बीर (अल्लाहु अक र) इसी तरह कहकर हाथ सीधे छोड़ देगा आप भी ऐसा ही करें, फिर इमाम अल्लाहु अक्बर कहते हुए कानों तक हाथ ले जा कर हाथ बाँध लेगा, नीयत वाली तक्बीर के बाद तीन जाइद तक्बीरें हुई यह तीनों तक्बीरें (अल्लाहु अक्बर कहना) इमाम और मुकतदी सबके लिए ज़रूरी हैं, हाथ बाँधने और छोड़ने में ग़लती हो जाए तो नमाज़ खराब न होगी लेकिन तीनों तक्बीरें ज़बान से कहना ज़रूरी हैं अब इमाम सू–रए–फातिहा पढ़ कर कोई सूरे मिलाएगा मुक़तदी ख़ामोशी से इमाम की क़िराअत सुनें और सू–रए–फ़ातिहा के ख़त्म पर आहिस्ता से आमीन कह लें, फिर रुकूअ़ और दो सजदों के बाद इमाम के साथ आप दूसरी रकअत के लिए खड़े होंगे, अब इमाम सू–रए–फातिहा पढ़ेगा सू–रए–फातिहा के खत्म पर फिर आप आहिस्ता से आमीन कहें। इमाम सू–रए–फातिहा के बाद कोई सूरे मिला कर अल्लाहु अक्बर कह कर कानों तक हाथ ले जा कर हाथ सीधे छोड़ देगा आप भी ऐसा ही करें (यही वह जगह है जहाँ इमाम से भी चूक हो जाती है और वह आम नमाज़ों की तरह रुकूअ़ में चला जाता है इसलिए इस मकाम को खूब याद रखना चाहिए) फिर इसी तरह दूसरी और तीसरी तक्बीरें कहेगा और हर बार हाथ छोड़ देगा, आप भी ऐसा ही करें यह तीनों तक्बीरें भी इमाम व मुकतदी सब के लिए ज़बान से कहना ज़रूरी हैं, फिर इमाम अल्लाहु अक्बर कह कर रुकूअ़ में जाएगा आप भी ऐसा ही करें और आम नमाज़ों की तरह नमाज़ पूरी करें, अब इमाम दो खुत्बे पढ़ेगा सब मुक्तदी खामोशी से सुनें, खुत्बे के बाद आप की नमाज़ पूरी हो गई। कुछ इमाम, नमाज़ का सलाम फेर कर दुआ मांगते हैं तो बाज़

शेष पृष्ठ......27.... पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऊँचे अख़्लाक़ और पवित्र विशेषताओं का तत्वपूर्ण बयान–

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऊँचे अख़्लाक़ और पवित्र विशेषताओं और शरीफाना आदतों का ज़िक्र हिन्द बिन अबी हाला रज़ि0 ने जो उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा के बेटे और हज़रत हसन और हुसैन रज़ि0 के मामू हैं, बहुत व्यापक और सारगर्भित शब्दों में किया है। उनके अल्फ़ाज़ यह हैं:–

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर वक्त आख़िरत की सोच में रहते जो प्रायः निरन्तरता के साथ क़ायम था जैसे किसी समय भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चैन हासिल नहीं। अक्सर देर तक खामोश रहते, बिना ज़रूरत न बोलते, बातचीत शुरु करते तो शब्दों को पूरा पूरा अदा करते और इसी प्रकार बात समाप्त करते। आपकी बातचीत और बयान बहुत साफ और दो टूक होता। बातचीत न बे ज़रूरत लम्बी होती और न बहुत मुख़्तसर। आप नरम मिज़ाज थे और नरम बात करने वाले थे। सख़्त मिज़ाज और बेमुरव्वत न थे। न किसी को अपमानित करते न अपने लिए अपमान पसंद करते। नेअ़मत की बड़ी क़द्र करते और उसको बहुत ज़ियादा जानते। चाहे कितनी ही थोड़ी हो और उसकी बुराई न फरमाते। खाने पीने की चीज़ों की न बुराई करते न तारीफ़। दुन्या और दुन्या से सम्बन्धित कोई भी चीज़ हो तो उस पर आपको कभी गुस्सा न आता। लेकिन जब खुदा के हक़ को दबाया जाता तो उस समय आपके जलाल के सामने कोई चीज़ ठहर नहीं सकती थी, यहां तक की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसका बदला ले लेते। जब इशारा फरमाते तो पूरे हाथ के साथ इशारा फरमाते। जब किसी बात पर तअ़ज्जुब फरमाते तो हाथ को पलटते। बात करते समय दाहिने हाथ की हथेली को बाएं हाथ के अंगूठे से मिलाते। गुस्से और नागवारी की बात होती तो उस तरफ से मुँह फेर लेते खुश होते तो नज़रें झुका लेते। आपका हंसना ज़ियादातर तबस्सुम था जिससे सिर्फ आपके दाँत जो बारिश के ओलों की तरह साफ, निर्मल व चमकदार थे दिखाई देते।"

हज़रत अली रज़ि0 जो आपके परिवार के एक व्यक्ति थे, आपको बहुत क़रीब से देखा था, और उन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जानने के बेहतरीन मौक़े हासिल थे। मानव प्रवृत्ति तथा आचरण की बारीकियों पर उनकी गहरी नज़र थी। साथ ही चरित्र चितरण पर उनको अच्छी कुदरत थी। वह आपके महान चरित्र और अख़्लाक़ के बारे में कहते हैं:–

"आप स्वभाव से बदकलामी, और बेहयाई और बेशर्मी से दूर थे और बनावटी तौर पर भी आपसे ऐसी कोई बात न ज़ाहिर होती थी। बाज़ारों में आप कभी आवाज़ बुलन्द न फरमाते। बुराई का बदला बुराई से न देते। बल्कि क्षमा कर देते। आपने कभी किसी पर हाथ न उठाया सिवाए इसके कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद का मौक़ा हो। किसी नौकर या औरत पर आपने कभी हाथ न उठाया। मैंने कभी आपको किसी जुल्म व ज़ियादती का बदला लेते नहीं देखा। जब तक कि अल्लाह की निर्धारित सीमाओं की खिलाफवर्ज़ी न हो और उसकी हुरमत (इज़्ज़त) पर आंच न आए। हाँ! अगर अल्लाह के किसी हुक्म को पामाल किया जाता और उसके गौरव पर आंच आती तो आप उसके लिए हर व्यक्ति से अधिक गुस्सा होते। दो चीज़ें सामने होतीं तो हमेशा आसान चीज़ को चुनते। जब अपने घर आते आम इंसानों की तरह नज़र आते। अपने कपड़ों को साफ करते, बकरी का दूध दूहते, अपनी सब ज़रूरतें खुद पूरी करते।"

अपनी ज़बान-ए-मुबारक को महफूज़ रखते और सिर्फ उसी चीज़ के लिए ज़बान से कुछ फरमाते जिससे आपको कुछ सरोकार होता। लोगों की दिलदारी फरमाते और उनका दिल न दुखाते। किसी क़ौम व बिरादरी का सरदार और शरीफ आदमी आता तो उसकी इज़्ज़त करते और उसको अच्छे ओहदे पर नियुक्त करते। लोगों के बारे में कुछ कहते तो बहुत सोच समझ कर कहते और उन्हें आप अपनी संरक्षता और मीठे वचन से महरूम न रखते। अपने साथियों के हालात की बराबर खबर रखते। लोगों से लोगों के मामलों के बारे में पूछते रहते। अच्छी बात की अच्छाई बयान करते और उसे बल प्रदान करते। बुरी बात की बुराई करते और उसे कमज़ोर करते। आपका व्यवहार समान तथा यकसां होता। आप किसी बात से ग़फलत न करते, इस ख़्याल से कि कहीं दूसरे लोग भी ग़ाफिल न होने लगें और उक्ता जाएं। हर हाल और हर मौक़े के लिए आपके पास उस हाल के मुताबिक ज़रूरी सामान था। हक़ के मामले में न कोताही करते और न हद से आगे बढ़ते थे। आपके क़रीब जो लोग रहते थे वह लोग सबसे अच्छे और चुने हुए होते थे। आपकी निगाह में सबसे ज़ियादा अफज़ल वह था, जिसका अख़्लाक आम और सबके लिए हो। सबसे ज़ियादा उसकी क़दर करते जो दूसरों का दुख बांटने और उनकी मदद व सहायता करने में सबसे आगे होता। अल्लाह का नाम लेते हुए खड़े होते और अल्लाह का नाम लेते हुए बैठते। जब कहीं जाते तो जहां जगह मिलती वहीं बैठते और दूसरों से ऐसा ही करने के लिए कहते। अपनी सभा में आए हुए लोगों में से हर व्यक्ति को पूरा सम्मान देते। आपकी सभा में शरीक हर व्यक्ति यह समझता कि उससे बढ़कर आपकी निगाह में कोई और नहीं है। अगर

कोई व्यक्ति आपको किसी मक़सद से बिठा लेता या किसी ज़रूरत में आपसे बात करता तो बड़े सुकून के साथ उसकी बात सुनते यहां तक की वह खुद ही अपनी बात पूरी करके चला जाता। अगर कोई व्यक्ति आपसे कुछ मांगता और कुछ मदद चाहता तो बिना उसकी ज़रूरत पूरी किये उसे न लौटाते या कम से कम नरम और मीठे एवं अच्छे प्रकार से जवाब दे देते। आपका आचरण तमाम लोगों के लिए आम था। आप उनके हक़ में बाप हो गए थे। हक़ के मामले में तमाम लोग आपकी नज़र में बराबर थे। आपकी मजलिस ज्ञान व भक्ति, हया व शर्म, सब्र व अमानतदारी की मजलिस थी, न उसमें आवाज़ें बुलन्द होती थीं, न किसी की बुराईयाँ बयान की जाती थीं न किसी की इज़्ज़त पर हमला होता, न किसी की कमज़ोरियों का ढिंढोरा पीटा जाता। सब एक दूसर के बराबर थे और सिर्फ तक़वे के लिहाज़ से उनको एक दूसरे पर फज़ीलत (प्रमुखता) हासिल होती थी। इसमें लोग बड़ों का सम्मान और छोटों के साथ रहम दिली और शफ़क़त का मामला करते थे। ज़रूरतमंद को अपने पर प्राथमिकता देते थे मुसाफिर और नए आने वाले की हिफ़ाजत करते और उसका ख्याल रखते थे।

आप सदा खुश रहते थे, बहुत नर्म अख़्लाक और नर्म पहलू थे, न सख्त तबीअ़त के थे न सख़्त बात करने के आदी थे। न चिल्ला कर बोलने वाले न घटिया और बाज़ारू बात करने वाले, न किसी को ऐब लगाने वाले, न तंग दिल कंजूस, जो बात आपको पसंद न होती, उसकी ओर ध्यान न देते और उसका जवाब भी न देते। तीन बातों से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने आपको बिल्कुल बचा रखा था। एक झगड़ा, दूसरे घमंड और तीसरे ग़ैर ज़रूरी बेकार काम। लोगों को भी तीन बातों से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बचा रखा था, न किसी की बुराई करते थे, न उसको ऐब लगाते थे और न उसकी कमज़ोरियों और पोशीदा बातों के पीछे पड़ते थे। सिर्फ वह बात करते थे जिस पर सवाब की उम्मीद होती थी। आप जब बात करते तो वहां हाज़िर लोग अदब से इस तरह सर झुका लेते थे जैसे लगता था कि उनके सरों पर चिड़ियाँ बैठी हुई हों, जब आप खामोश होते तब यह लोग बात करते। आपके सामने कभी बहस न करते। आपकी मजलिस में अगर कोई आदमी बात करता तो बाकी लोग खामोशी से सुनते यहां तक की वह अपनी बात पूरी कर लेता। आपके सामने हर व्यक्ति की बात का वही दर्जा होता जो उसके पहले वाले व्यक्ति को होता (कि पूरे इत्मीनान से अपनी बात कहने का मौक़ा मिलता और उसी कदरदानी और उसी इत्मीनान के साथ सुना जाता) जिस बात से सब लोग हँसते उस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी हंसते जिस पर सब तअज्जुब करते आप भी उस पर तअज्जुब करते।

शेष पृष्ठ......35.... पर

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

मुसलमानों की कुछ विशेषताएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

मुसलमानों की पहली विशेषता निश्चित विश्वास एवं एक स्थायी दीन व शरीअत है–

संसार के समस्त मुसलमानों (और हिन्दुस्तान के मुसलमान भी इस सार्विक सिद्धान्त से पृथक नहीं) की पहली विशेषता यह है कि उनके मिल्ली (धर्म सम्बन्धी सामूहिक) अस्तित्व की आधारशीलता एक निर्धारित विश्वास, एक स्थायी दीन—व शरीअत है जिसको संक्षिप्त रूप में मज़हब[1] कहते हैं, यद्यपि इससे उसका सही भावार्थ अदा नहीं होता और वह शाब्दिक सामन्जस्य के कारण भ्रम एवं शंका उत्पन्न कर देता है, इसी कारण इसका मिल्ली (धर्म सम्बन्धी सामूहिक) नाम और विश्वव्यापी उपाधि किसी वंश, खानदान, धार्मिक नेता, धर्म संस्थापक और देश से सम्बद्ध होने के बजाय एक ऐसे शब्द से उद्धृत है जो एक निर्धारित विश्वास एवं व्यवहार को प्रकट करता है। संसार की अन्य धार्मिक जातियां अपने अपने धार्मिक नेताओं, धर्म संस्थापकों, पैग़म्बरों, देशों अथवा नस्लों से सम्बन्धित हैं और उनके नाम उन्हीं महानुभावों या उन्हीं नसलों और देशों के नाम से उद्धृत हैं। यथा यहूदी, यहूद और बनी इसराईल कहलाते हैं। यहूदा हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के बेटों में से एक बेटे का नाम और इसराईल स्वयं हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का नाम है। ईसाई हज़रत ईसा से सम्बन्धित हैं। कुरआन मजीद में उनको नसारा की संज्ञा दी गई है, नासिरा हज़रत मसीह की जन्म भूमि का नाम है। मजूसियों के धर्म के अनुयायियों को, जिन्हें सामान्यतः पारसी के नाम से पुकारते हैं, शुद्ध नाम जुरतुश्ती है, जिसका सम्बन्ध उस धर्म के प्रवर्तक से है। बौद्ध धर्म अथवा बौद्धमत अपने प्रवर्तक गौतम बुद्ध से सम्बन्धित है, यही बात भारत के अन्य धर्मों की है।

उम्मते मुस्लिमा की उपाधि–

मुसलमानों का सम्बन्ध, जिनको कुरआन मजीद तथा समस्त धार्मिक ग्रन्थों और इतिहास एवं साहित्य में "मुस्लिमून" और "उम्मते मुस्लिमा" की संज्ञा दी गई है,

---

1. संसार के बहुत से धर्मों विशेषकर मसीही दुनिया में जो विशिष्ट प्रयोगों एवं कठिनाइयों से गुज़री हैं और जहां राज्य जीवन की समस्त क्रियाओं पर नियंत्रण रखता है, और जिसका आरम्भ से कथन है कि "जो कुछ खुदा का है खुदा को दो और जो कुछ राजा का है, वह राजा को दो", धर्म का यह संकीर्ण दृष्टिकोण हो गया है और वहां सामान्यता इस तथ्य को स्वीकार कर लिया गया है कि धर्म मनुष्य का व्यक्तिगत मामला है। इसी प्रकार भारत में भी बहुत जगह धर्म केवल उपासनाओं एवं कुछ धार्मिक रीतियों का पालन मात्र रह गया है। इस्लाम में दीन का आशय इससे कहीं अधिक विस्तृत एवं व्यापक है और इसीलिए वह कहीं अधिक प्रभावशाली होने वाला तत्व है।

और अब भी संसार के कोने कोने में वह "मुस्लिम" के नाम से जाने पहचाने जाते हैं, शब्द इस्लाम की ओर है, जिसका अर्थ ,खुदा की बादशाही के आगे नत मस्तक हो जाना, आधीनता स्वीकार कर लेना, अपने को समर्पित (Surrender) कर देना– जो एक अटल निर्णय, एक निर्धारित गतिविधि, जीवन पद्धति तथा एक जीवन प्रणाली है, वह अपने पैग़म्बर से असीम श्रद्धा तथा घनिष्ट सम्बन्ध रखने पर भी बहैसियत क़ौम (सामूहिक वर्ग के रूप में) मुहम्मदी नहीं कहलाते। भारतवर्ष में पहली बार अंग्रेज़ों ने उनको मुहम्मडन (Mohammedans) और उनसे सम्बन्धित कानून को (Mohammedans Law) की संज्ञा दी, परन्तु उन महानुभावों ने जो इस्लाम की आत्मा एवं स्प्रिट (Spirit) से अवगत थे, इस पर आक्षेप प्रकट किया, और अपने लिए अपने पुरातन नाम "इस्लाम" को ही उचित समझा और उसे ही प्रधानता दी, उन संस्थाओं को जिनका नाम अंग्रेज़ों के प्रारम्भिक शासन काल में मुहम्मडन कालेज (Mohammedan College) या मुहम्मडन कान्फेरेन्स (Mohammedan Conference) पड़ गया था, मुस्लिम शब्द से बदल दिया[1]।

विश्वास (अक़ीदा), धर्म तथा धर्मशास्त्र (शरीअत) मुसलमानों के विचारानुसार मौलिक महत्व के विषय हैं–

इसी आधार पर अक़ीदा, दीन (धर्म) तथा शरीअत, मुसलमानों की सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था, उनकी सभ्यता एवं संस्कृति तथा आचार व्यवहार में मौलिक महत्व रखते हैं। वह स्वाभाविक रूप से इनके सम्बन्ध में आसाधारण रूप से अति भावुक (Sensitive) पाये गये हैं। उनकी व्यक्तिगत तथा सामूहिक समस्याओं पर विचार करने तथा उनसे सम्बन्धित विधान का निर्माण करने, नियमों तथा अधिनियमों यहां तक कि सामाजिक एवं नैतिक विषयों में इस मौलिक तथ्य को समक्ष रखने की आवश्यकता पड़ी है। यह बात भी बुद्धिगम्य रहना चाहिए कि थोड़े से उन नियमों को छोड़ कर जो स्थानीय रीति रिवाज, प्रथा एवं परम्परा (Convention) या जागीरदाराना व्यवस्था के प्रभाव से मुसलमानों ने अपनाया और उनको अंगेज़ी शासन काल में (Mohammedans Law) में सम्मिलित कर दिया गया। उनको व्यक्तिगत विधान (Personal Law) का मूलाधार तथा मौलिक अंग कुरआन मजीद से संग्रहीत तथा उसका विवरण, विवेचन एवं स्पष्टीकरण हदीस व फ़िक़्ह पर आधारित है।

शरीअत के क़ानूनों में संशोधन अथवा परिवर्तन करने का किसी को अधिकार नहीं–

इसमें कुछ भाग ऐसा विशेष, विश्वस्त तथा स्पष्ट रूप से कुरआन मजीद में

---

1. यथा–सर सैयद खाँ (मरहूम) द्वारा स्थापित मदरसतुलउलूम अलीगढ़ का नाम पहले ऐंग्लो मुहम्मडन कालेज (Anglo Oriental Mohammedan College) था, जब यूनिवर्सिटी का रूप धारण किया, तो उसका नाम मुस्लिम यूनीवर्सिटी रखा गया। इसी प्रकार आरम्भ में मुहम्मडन एजूकेशन कान्फेरेन्स (Mohammedan Educational Conference) था, बाद में मुस्लिम एजूकेशनल कान्फ्रेरेन्स के नाम से लिखा और याद किया जाने लगा।

शेष पृष्ठ......31.... पर

एक गैर मुस्लिम नवयुवक जो ईद की नमाज़ से प्रभावित हुआ

—इदारा

एक शिक्षित गैरमुस्लिम ने अपने शिक्षित मित्र अनवर को बताया किः

मैं आपके तथा दूसरे मुस्लिम मित्रों से सुन चुका था कि मस्जिदों में जो पाँच समय सामूहिक (जमाअत से) नमाज़ होती है उसमें गैरमुस्लिमों का सम्मिलित होना वर्जित है, मेरे मन में यह बात आती थी कि कहीं इन नमाज़ों के समय गैरमुस्लिमों के विरोध में कोई योजना तो नहीं बनाई जाती परन्तु मैं यह बात किसी मुसलमान से पूछने का साहस न कर सका। मुझे ज्ञात था कि मुसलमानों की ईद की नमाज़ एक मेले के समान होती है, भारी भीड़ में लोग एक दूसरे को पहचानते भी नहीं हैं, तथा बड़ी संख्या में लोग मेरी तरह पतलून शर्ट में भी होते हैं तथा बे टोपी के भी होते हैं, अतः मैंने एक योजना बनाई, और सुब्ह के समय नहा धोकर अच्छा वाला पत्लून शर्ट का जोड़ा पहन कर घर वालों से एक जगह जाने का बहाना करके ईदगाह पहुंच गया, नमाज़ से पहले एक सज्जन ने भाषण दिया जिस में मुसलमनों को परस्पर प्रेम करने का आहवान था। निर्धनों तथा अनाथों की मदद का आहवान था, मानव जाति की सेवा का आहवान था, कुप्रथाओं से दूर रहने की बात थी व्यर्थ व्यय से रोका गया था, सब से अधिक पाँचों समय की नमाज के प्रतिबन्ध की बात थी तथा अपने बच्चों को शिक्षित बनाने पर ज़ोर था, मैं आश्चर्य में रह गया कि गैरमुस्लिमों के विरोध में किसी योजना का कोई नाम भी न था, भाषण समाप्त हुआ नमाज़ खड़ी हुई मैं भी एक पंक्ति में खड़ा हो गया और पूरी नमाज़ बग़ल वाले को देख देख कर पूरी की, फिर देखा लोग पंक्तिबध बैठे रहे और नमाज़ पढ़ाने वाले इमाम ने खड़े हो कर फिर भाषण दिया, फिर बैठ गये फिर खड़े हुए और पुनः भाषण दिया परन्तु दोनों भाषण अरबी भाषा में थे जिसे मैं समझ न सका।

मित्रवरः आप की इस नमाज़ से मैं बहुत प्रभातित हुआ एक भारी समूह का अपने पालनहार के सामने एक साथ झुक जाना, फिर चुपके चुपके कुछ कहना फिर खड़े हो कर कुछ कहना, फिर एक साथ नतमस्तक हो कर चुपके चुपके कुछ कहना आदि ने मुझे बहुत प्रभावित किया।

अब मैं इस बात के लिए उत्सुक हूं और आप से मांग करता हूं कि आप मुझे उन अरबी बोलों का अर्थ बताएं जो नमाज़ में ज़ोर ज़ोर से इमाम साहब और उनके पीछे के लोग बोल रहे थे उस समय तो मुझ पर यह प्रभाव पड़ा था कि मैं अपने पालनहार के स्मरण में खो गया।

प्रिय मित्र मैं यह भी जानना चाहूंगा कि मेरे नमाज़ में पंक्ति में खड़े

होने से दूसरे की नमाज़ खराब तो नहीं हुई, इसलिए कि मैं गैरमुस्लिम हूं।

अनवर ने उत्तर दिया:

मेरे भाई पहली बात तो यह बताता हूं कि आपके ईद की नमाज़ में पंक्ति में खड़े होने से किसी की नमाज़ खराब नहीं हुई। दूसरी बात यह कि नमाज़ के बोल अरबी में बोले जाते हैं उनका अर्थ बयान करूं तो यह मेरा कर्तव्य है, और बड़े खेद की बात यह है कि इन बोलों के अर्थों से हमारे बहुत से मुस्लिम भाई भी परिचित नहीं हैं।

जब इमाम और सभी लोग पंक्तिबध खड़े हो गये तो सबने मन में सोचा कि नमाज़ पढ़ने जा रहा हूँ और अल्लाहु अक्बर कह कर कानों तक हाथ ले जा कर हाथ बाँध लिए,फिर अरबी भाषा में ईश्वर की प्रशन्सा की फिर सब रुक कर तीन बार अल्लाहु अक्बर कहा, अल्लाहु अक्बर का अर्थ है "अल्लाह सबसे बड़ा है" फिर इमाम ने पवित्र कुर्आन की पहली सूरे पढ़ी, इस सूरे को सूरतुल फ़ातिहा कहते हैं यह हर नमाज़ में पढ़ी जाती है, इसको इमाम ने जोर जोर से पढ़ा सबने ध्यान से सुना और अन्त में आमीन कहा इसका अर्थ है– समस्त प्रशंसाएं केवल अल्लाह के लिए हैं, जो सारे लोकों का अर्थात समस्त संसार का स्वामी है बड़ा दयालु महा कृपालू है, बदले (प्रतिफल) के दिन का मालिक है, हे प्रभू (ऐ अल्लाह) हम तेरी ही उपासना करते हैं तथा तुझ ही से सहयोग (मदद) मांगते हैं, हे अल्लाह हम को सीधा मार्ग दिखा उनका मार्ग जो पुरस्कार के भागी हुए, उनका मार्ग नहीं जिन पर तेरा प्रकोप हुआ न उनका मार्ग जो भटक गये। आमीन अर्थात हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ले।

उसके पश्चात कुर्आन का कुछ और भाग पढ़ा जाता है जो हर नमाज़ में बदल बदल कर पढ़ा जाता है उसका अर्थ छोड़ते हैं, सब अपने पालनहार के समक्ष झुकते हैं तो उसमें भी कुछ जुमले अरबी भाषा में कहते हैं उसका अर्थ यह है–

दोष रहित पवित्र है मेरा महान पालनहार, इस वाक्य को कई बार दोहराते हैं, फिर जब खड़े होते हैं तो इमाम अरबी में कहता है अनुवाद: जिसने अल्लाह की प्रशन्सा की अल्लाह ने उसकी सुन ली। इमाम के पीछे वाले सभी नमाज़ी अरबी ही में कहते हैं जिसका अर्थ है–

हे हमारे स्वामी तेरे ही लिए प्रशन्सा है, जब सब लोग नतमस्तक होते हैं तो चुपके चुपके अरबी में कहते हैं अनुवाद:

पवित्र है तथा महान है मेरा सर्वोच पालनहार, नमाज़ के विशेष अरबी बोली का भावार्थ मैंने आपके सामने प्रस्तुत किया मैं समझता हूं आप बहुत कुछ समझ गये होंगे।

प्रिय मित्र! आज अरबी में ईश प्रशंसा ईशभक्त तथा ईश विनय के ऐसे मंमोहक बोलों से अवगत कराया जिनको मैं ने सुना भी न था, मैं मुस्लिम तो नहीं हूं परन्तु ईश्वरवादी अवश्य हूं और अब अल्लाहु अक्बर हमारे मन में बस गया है, दूसरी बात यह कि मेरे इस प्रयास से जो मैं मुसलमानों के विषय में भ्रांत में भटका हुआ था वह मुझ से दूर हो गया।

मैं समझता हूं कि मैंने बहुत बड़ा लाभ कमा लिया।

❖❖❖

रोज़ा और ईदुलफित्र

हिन्दी लिपिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —हजरत मौ0 सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

रोज़ा इस्लाम के पाँच बुन्यादी स्तंभों में से एक बुन्यादी स्तंभ है, यह बुन्यादी स्तंभ इस्लाम के वह सुतून हैं जिन पर दीने इस्लाम की इमारत काइम है, उनमें से हर सुतून की हिफाज़त ज़रूरी है ताकि दीने इस्लाम की इमारत काइम रहे, इस्लाम के एक मौलिक स्तंभ होने के साथ रोज़े की जो विशेषतायें और उपलब्धियां हैं उन से इन्सान अपनी प्राकृतिक भाव के लिहाज से गौर करे तो उसको उसमें अपनी जिन्दगी के लिए अनेक रौशन पहलू नज़र आयेंगे, उच्च इंसानी गुणवत्ताओं पर अमल करने के लिए अपनी स्वार्थप्रताओं को दबाने और अपने स्वार्थ और अभिलाषा को नज़र अंदाज़ करके अपने परवरदिगार के आदेशों का पालन करना उसके अहम पहलू हैं, रोज़े के ज़रिये इन्सान एक ओर अंदुरूनी खूबियों से सुसज्जित होने का प्रयास करता है, और दूसरी ओर दूसरों के दुख व परेशानी को अपने तजुर्बे में ला कर अपने अंदर हमदर्दी और रहम दिली के एहसास को जगह देता है।

कुर्आन मजीद में उसकी अहमियत और उसमें भलाई के इंसानी जज़्बे की शक्ति, इन्सानी हमदर्दी, और मन की इच्छा शक्ति को कंट्रोल करने के उद्देश्य की ओर खुला इशारा किया गया है और एक साल में एक माह उसकी ट्रेनिंग के लिए निर्धारित करते हुए उसकी यह फज़ीलत भी बताई गई है कि अल्लाह तबारक व तआला की मुकद्दस किताब कुर्आन मजीद का नुजूल भी इसी मास में हुआ अल्लाह का इरशाद है, अनुवाद— ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फर्ज किये गये जैसे कि उन लोगों पर फर्ज किये गये थे जो तुम से पहले हुए हैं अजब नहीं कि तुम मुत्तकी (परहेजगार) बन जाओ, गिन्ती के चंद रोज़ हैं लेकिन तुममें से जो शख़्स बीमार हो या सफर में हो तो वह दूसरे दिनों में गिंती पूरा करले, और जो लोग उसे मुश्किल से बर्दाश्त कर सकें उनके जिम्मे फिदया है कि वह एक मिसकीन को खाना खिलायें, जो कोइ खुशी खुशी नेकी करे वह उसके हक़ में बेहतर है, और अगर तुम इल्म रखते हो तो बेहतर तुम्हारे हक़ में भी है कि रोज़े रखो। माहे रमजान वह है जिसमें कुर्आन उतारा गया, जो लोगों को हिदायत करने वाला है और जिसमें हिदायत की, हक व बातिल की फर्क करने वाली निशानियां हैं, तुम में से जो शख़्स इस महीने को पाये उसको रोज़ा रखना चाहिए, हाँ जो बीमार या मुसाफिर हो उसे दूसरे दिनों में यह गिन्ती पूरी करनी चाहिए, अल्लाह तआला का इरशाद तुम्हारे साथ आसानी का है सख्ती का नहीं वह चाहता है कि तुम गिन्ती पूरी कर लो और अल्लाह तआला की दी हुई हिदायत पर इस प्रकार की बड़ाइयाँ बयान करो और

उसका शुक्र करो।
(सू–रए–बकरः 183–185)

रोज़े की शैली तथा उसकी बनावट ऐसी रखी गयी है कि उससे फरिश्तों जैसी जिन्दगी उभरती है, फरिश्ते अल्लाह तआला की वह मखलूक़ हैं जो न खाते हैं, न पीते हैं, और न उनको ज़मीनी प्राणियों की भांति जमीनी ज़रूरियात पेश आती हैं, वह हर समय अल्लाह तआला की ओर ध्यान जमाये उसकी इबादत व आज्ञाकारी में लगे रहते हैं, न थकते हैं और न नाफरमानी करते हैं, रोज़ेदार की जिन्दगी मुम्किन हद तक ऐसी ही जिन्दगी बन जाती है।

जमीनी प्राणी का व्यक्ति होने की वजह से उसको यक़ीनी तौर पर इंसानी ज़रूरतें तो पूरी करनी होती हैं लेकिन दूसरे मुम्किन और इख्तियारी मुआमलात में रोज़ादार फरिश्तों की तरह इबादत व इताअत में लगा रहता है, न खाता है न पीता है और न कोई नाफरमानी करता है।

रोज़ादार इस प्रकार की जिन्दगी इख्तियार करने में कामयाब और मक़बूल रोज़ादार साबित होता है और उसमें कोताही तथा सुस्ती करने में कोताही के समान रोज़े के लाभ से वंचित हो जाता है। रोज़े का यह जमाना चूंकि सारे मुसलमानों के लिए एक ही समय में आता है इसलिए एक साधारण दृश्य और माहौल बन जाता है, और ऐसा माहौल बनाने की ताकीद भी आई है यहां तक की बीमारी या सफर की वजह से रोज़ा न रख सकने वाले को भी ताकीद है कि वह खुल्लम खुल्ला अपने रोज़े न रखने का प्रदर्शन न करें ताकि रोज़े की फिज़ा मुतअस्सिर न हो।

मुसलमानों को इस रूहानी अमल के जरिए अपनी जिन्दगी का जाइज़ा लेने का मौक़ा मिलता है उनका उद्देश्य रूहानी मख्लूक फरिश्तों की तरह जिन्दगी इख्तियार करना होता है, उनकी एक प्रकार सामानता इख्तियार करनी होती है उनको यह देखना होता है कि वह कहां तक इस उद्देश्य को पूरा कर रहे हैं और अगर उनसे कुछ कमी व कोताही है तो वह उसको दूर करने की क्या कोशिश करते हैं, वह अपनी पूर्ण दिनचर्या में फरिश्ते तो नहीं बन सकते लेकिन कम से कम उनको जो थोड़ा मौक़ा इसके प्रदर्शन का मिल रहा है, उससे अपनी ताकत भर लाभ उठा सकते हैं, और अपने मालिक की रहमतों और रज़ामंदियों से माला माल हो सकते हैं।

अल्लामा इब्ने क़ैइम रोज़े के हिकमतो मक़ासिद पर रौशनी डालते हुए लिखते हैं–

रोज़ा जाहिरी व अंदरूनी अंगों की हिफाजत में बड़ी तासीर रखता है, खराब तत्व के जमा हो जाने से इन्सान में जो खराबियां पैदा हो जाती हैं, उससे वह उसकी हिफाजत करता है जो चीजें स्वास्थ के लिए हानिकारक हैं उनको निकाल देता है और जिस्म के दूसरे अंगों में जो खामियां गलत इच्छाओं के नतीजे में जाहिर होती रहती हैं वह रोज़े से खत्म होती हैं, वह स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद और तक़्वे व परहेज़गारी की ज़िन्दगी इख्तियार करने में

बहुत मददगार है, अल्लाह तआला का इरशाद है–

"ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फर्ज किये गये जैसा कि उन लोगों पर फर्ज किये गये थे जो तुमसे पहले हुए हैं अजब नही कि तुम मुत्तकी व परहेजगार बन जाओ"।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया–

"अस्सौमुजुन्नतुन" रोजा ढ़ाल है, चुनानचे ऐसे आदमी को जो निकाह का ख्वाहिशमंद हो और ताकत न रखता हो, उसको रोजा रखने की हिदायत की गयी है और उसको इसका विषनिकारक करार दिया गया है, मक़सद यह है कि रोज़े के फवाइद चूंकि अक्ले सलीम और फितरते सहीहा के एतिबार से सिद्ध थे इसलिए इसको अल्लाह तआला ने अपने बंदों की हिफाजत के खातिर सिर्फ और सिर्फ अपनी रहमत और एहसान से फर्ज किया है। (जादुल मआद 1/52)

हमारी आम ज़िन्दगी तो दीनी कमज़ोरियों और अमली कोताहियों से भरी हुई है, दुन्यावी राहतों और लज्जतों की फिक्र, दुन्यावी फवाइद के हुसूल की फिक्र, हर समय नफ्स की ख्वाहिशात की फिक्र, अपने शौक व ख्वाहिश के असर से दूसरों के साथ ज़ियादती व हकतल्फी, किसी की गीबत, कहीं झूठ, किसी के साथ ज़ियादती, किसी की हक तल्फी, हमारी ज़िन्दगी कमोबेश इन तमाम बातों से दागदार रहती है, साल भर में सिर्फ एक महीना हमको दिया गया है कि हम इन तमाम बुरी और नामुनासिब बातों से परहेज़ की मश्क करें, और कोशिश करें कि हमारी ज़िन्दगी इन सब बातों से जितना मुम्किन हो पाक हो, अगर इसमें कामयाब होते हैं तो यह फरिश्तों के कारनामे से बड़ा कारनामा होगा, क्योंकि फरिश्ते ऐसा करने पर प्राकृतिक तौर से मजबूर हैं, लेकिन हम ज़मीनी मख्लूक़ होने के बाइस प्राकृतिक तौर पर मजबूर नहीं हैं, हम अपने इरादे और फिक्र मंदी से इसको इख्तियार करेंगे, फरिश्तों को ऐसी हालत के लिए कुर्बानी नहीं करनी पड़ती, हम मेहनत व कुर्बानी से उसको इख्तियार कर सकेंगे, इसलिए इंसान अगर फरिश्तों जैसी हालत इख्तियार करे तो उसका मकाम व मर्तबा फरिश्तों से बढ़ जाता है।

कुर्आन मजीद को इस माह के साथ खास तअ़ल्लुक़ है, खुद अल्लाह तआला ने इस माह की यह अज़ीम खुसूसियत बताई है कि इसमें कुर्आन मजीद नाज़िल हुआ, अल्लाह ने फरमाया "रमजान का यह महीना ऐसा है कि इसमें कुर्आन मजीद नाज़िल किया गया जो लोगों को भलाई की ओर रहनुमाई करने वाला है और उसमें हिदायत की रौशन बातें हैं और हक़ व बातिल के दरमियान फर्क वाजेह करने वाला है" (सू–रए–बकरः 185)

हज़रत मुजद्दिद अल्फे सानी रह0 अपने एक खत में लिखते हैं "इस महीने को कुर्आन मजीद के साथ बहुत खास मुनासबत है, कुर्आन मजीद इसी माह में नाज़िल किया गया, यह महीना हर क़िस्म की खैरो बरकत का योग है, आदमी को साल भर

में सामूहिक तौर पर जितनी बरकतें हासिल होती हैं वह इस मास के सामने इस प्रकार हैं जिस तरह समुद्र के मुक़ाबले में एक कतरा, इस महीने में दिल के सुकून का हुसूल पूरे साल दिल के सुकून के लिए काफी होता है और उसमें इंतिशार और दिल की परेशानी बचे हुए तमाम दिनों बल्कि पूरे साल को अपनी लपेट में ले लेती है, काबिले मुबारकबाद हैं वह लोग जिनसे यह महीना राज़ी हो कर गया, और नाकाम और बदनसीब हैं वह जो उसको नाराज़ करके हर किस्म के खैरो बरकत से महरूम हो गये। एक दूसरे खत में फरमाते हैं—

"अगर इस महीने में किसी आदमी को आमाले सालिहा की तौफीक़ मिल जाये तो पूरे साल उसको शामिले हाल रहेगी और अगर यह महीना बेअदबी फिक्रो तरद्दुद और इंतिशार के साथ गुज़रे तो पूरा साल उसी हाल में गुज़रने का अंदेशा है" (मक्तूबात द्वारा इमाम रब्बानी 1/8/45)

रोज़े की इफादियत और अल्लाह के नज़दीक उसकी अहमियत की यह बड़ी दलील है कि अल्लाह ने दूसरे आमाल के मुक़ाबले में इससे अपनी पसंद ज़ियादा जाहिर की है, हदीस शरीफ में अल्लाह तआला का यह इरशाद बताया गया है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम ने रोज़े की अहमियत और कद्रो कीमत बयान करते हुए इरशाद फरमाया कि आदमी के हर अच्छे अमल का सवाब दस गुने से सात सौ गुने तक बढ़ाया जाता है, मगर अल्लाह तआला का इरशाद है कि रोज़ा इस आम नियम से अलग और ऊपर है, वह बन्दे की ओर से खास मेरे लिए एक तोहफ़ा है, और मैं ही जिस प्रकार चाहूंगा उसका अज्र व सवाब दूंगा मेरा बन्दा मेरी रिजा के वास्ते अपनी ख्वाहिशे नफ्स और अपना खाना पीना छोड़ देता है तो मैं खुद ही अपनी मर्जी के मुताबिक उसकी इस कुर्बानी और नफ्स कुशी का भरपूर और अजीम बदला दूंगा (बुखारी—मुस्लिम)

रोज़ों का यह एक महीना मुसलमानों की ऐसी दीनी दौलत है जिससे उनको अनेकों प्रकार के लाभ हासिल होते हैं, इबादत की अदाइगी के साथ साथ मुसलमानों की सामाजिक जिन्दगी के अनेक भाग इस्लाह व दुरुस्तगी के अमल से गुजरते हैं, आपस की हमदर्दी गमख्वारी, एक दूसरे की मदद और इंसानी एहसासात की सही कार फरमाई का यह बेहतरीन मौक़ा होता है, चुनांचे रमज़ान के जमाने को सही ढंग से गुजारने के बाद एक मुसलमान इबादत की शानदार अदायेगी के साथ गफ़लतों, इंसानी क्रोधों और सख्त मिज़ाजी की कैफियत से पाक हो कर निकल सकता है, रोजेदार को एक माह तक उन तमाम बातों से परहेज़ करना होता है जो इंसान के नफ़्स को मोटा और उसकी तबीअत को अच्छे इन्सानी अख़्लाक़ से दूर कर देती हैं, इसको एक ओर अपने परवरदिगार के सामने बंदगी की जिम्मेदारियों को अंजाम देने का भरपूर मौक़ा मिलता है, तो दूसरी ओर अपनी इंसानी बिरादरी के साथ हमदर्दी और दिलदारी

के हुकूक़ भी अदा करने होते हैं, बन्दगी के इज़हार में इबादत के अमल के साथ अपने परवरदिगार के हुक्म के सामने अपनी राहत और अपनी मर्जी को कुर्बान करना होता है, इस कुर्बानी में नफ़्स की कुर्बानी भी होती है और बदनी आराम की भी कुर्बानी होती है, उसके इख़्तियार किये मामूलात में फ़र्क ले आया जाता है, खाने पीने के वक़्फ़ों को लंबा कर दिया जाता है और उनके औक़ात में भी तबदीली कर दी जाती है, वह जिस समय खाना खाता था उस समय उसको रोक दिया जाता है और जिस समय वह उमूमन नहीं खाता उस समय उसको खाने का समय बताया जाता है, उसके लिए तुलूऐ फज्र से पहले जब कि उसके उठने से कम से कम घण्टा दो घण्टा पहले का होता है उठ कर खाना खाया जाता है, और जब कि वह दिन में अपने आराम के मुताबिक खाना खाया करता है लेकिन रोज़े की हालत में उस को मना कर दिया जाता है, फिर सूरज डूबते ही उसको खाने की सिर्फ इजाज़त ही नहीं मिलती बल्कि उस समय उसके लिए यह काम अज्र व सवाब का काम करार दिया जाता है, फिर यह सिलसिला पूरे एक माह चलता है, इस लिससिले में खाने के अलावा पानी पीने को भी शामिल किया जाता है, इस तरह रोजेदार को अपने परवरदिगार के हुक्म पर भूका प्यासा रहना होता है और फिर उसी के हुक्म से खाना पीना इख़्तियार करना होता है, रोज़े की यह पाबंदियां अपनी तरह की खास प्रकार की पाबंदियां हैं।

ईदुलफित्र–

रमजान के 29 या 30 दिन ऐसे नूरानी माहौल व हालात में गुजर कर ईदुलफित्र का दिन आता है, जो लुत्फो इबादत और आराम व कुबूलियत दोनों को समेटे हुए आता है, इसमें दुन्यावी और दीनी दोनों तरह से खुशी का सामान होता है एक ओर तो उसको अपनी जाइज़ पसंद व ख्वाहिशात के मुताबिक जिन्दगी गुज़ारने की आज़ादी मिलती है, और दूसरी ओर पूरे एक माह इताअ़त व फरमांबरदारी और इबादत के अज्रो सवाब का फैसला होता है और उसको उसके इन्आम से नवाज़ा जाता है इस बिना पर ईद की रात को "लैलतुल जाइज़ा" इनाम की रात कहा गया है। रमज़ान अपने हक अदा करने वाले को ऐसी पाकीज़गी अता कर देता है जो उसके लिए साल भर के लिए तो–शए–बरकत व रहमत बनती है और साल गुज़रने पर फ़िर इस मुबारक अमल का मौक़ा आ जाता है और खैर व बरकत का यह प्रोग्राम दोहराने का अवसर आ जाता है।

रमज़ान का महीना एक मुसलमान को इस बात के एहसास से वाक़िफ करा देता है कि इस ज़मीन पर कितने ऐसे आदमी हैं जो इंसानी रिश्ते से उसी की तरह हैं लेकिन उनको भूख बर्दाश्त करना पड़ती है और कितने ऐसे हैं जिनको उनके इंसानी तक़ाज़ों को पूरा करने का सामान हासिल नहीं, रमजान यह भी बताता है कि आदमी को अपने इर्द गिर्द रहने वाले अपने ही तरह के लोगों की तकलीफ और दुख को जनना चाहिए,

और उसमें उसको उनकी कुछ न कुछ हमदर्दी भी करना चाहिए, इसीलिए ज़रूरतमंद की मदद भूखे आदमी को खाना खिलाना, रमज़ान के बहुत पसंदीदा कामों में करार दिया गया है, और जब इंसान रोजा रख कर भूख की तकलीफ से गुज़रता है तो यक़ीनन इसका एहसास होता है कि भूख क्या चीज़ है और उसमें हमदर्दी कैसा शानदार काम है और रोजा रख कर जब वह नफ़्स के अनेकों तक़ाज़ों से अपने को बाज़ रखने पर मजबूर होता है तो उसको इस बात की ट्रेनिंग का अवसर मिलता है कि वह बुरी बातों से अपने नफ़्स को रोके जो निन्दा योग्य और अच्छी और नेक ज़िन्दगी से मेल नहीं खाती हैं, इस प्रकार रमज़ान इंसान को अच्छा नेक और पाकीज़ा बनाने का एक कार्य पद्धति लेकर आता है जो इंसान के लिए एक ज़रूरी व्यवस्था है जिसमें इंसानों की बेहतरी और खूबी का इंतिजाम होने के साथ उसके परवरदिगार की खुशनूदी और रज़ामंदी का भी इंतिजाम है जिसका एक इनआ़म ईदुलफित्र की खुशी, और अस्ल इनआ़म परवरदिगार की खुशनूदी का हुसूल उसकी ओर से खुसूसी इनआ़म है।

रोज़ों की कार करदगी वाक़ई एक आला कारकरदगी है जिसके बारे में खुदा तआला ने फरमाया कि हर अमल का बदला तो उस प्रकार दिया जायेगा जैसा मुकर्रर किया गया है, लेकिन रोज़े का बदला मैं स्वयं खास प्रकार से अपनी ओर से दूंगा, इस लिए शैतान का ईद के दिन रोज़ा रखना और गम करना ठीक है कि उसके शिकार से कितने इंसान न सिर्फ यह कि बच निकले बल्कि उसकी तदबीर व कोशिश को बरबाद कर गये, और रोज़ेदारों की खुशी भी ठीक है कि उन्होंने अपने को शैतान के नरगे से बचा लिया और अपने परवरदिगार को राज़ी व खुश किया, वह अपने परवरदिगार की अज़मत व बड़ाई और खुदा के एक होने का कलिमा पढ़ते हुए ईद के दिन नमाज़ के लिए जाते हुए यह अलफाज़ अदा करते हैं "अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, लाइलाहा इल्लल्हाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द" अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है उसके अलावा कोई माबूद नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है हर प्रकार की तारीफ व खूबी उसी के लिए है, और इस प्रकार से वह शैतान के रोज़े को और भी सख्त और तकलीफ का रोज़ा बना देते हैं।

❖❖❖

या रब रहमत तेरे नबी पर

मेरे या रब तेरा करम
रहें न बाक़ी मेरे अलम
जो भी गुनाह मुझ से हुए हैं
उनपे मेरी आँखें नम
तेरे करम से ताइब हूँ मैं
बख़्शिश का हो जाए करम
या रब अगर तू राज़ी मुझ से
फ़िर तो नहीं है कोई ग़म
तेरी महब्बत शेवा मेरा
तेरे नबी का भरता हूँ दम
पैरो या रब तेरे नबी का
उनके पीछे मेरे क़दम
या रब रहमत तेरे नबी पर
बेशक हैं वह शाहे उमम

यज़ीदियों (एज़ दियों) का मुख्तसर तआररुफ

—शकील शम्सी

—हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

बचपन से मुझे यही मालूम था कि जो जुल्म में मुलव्विस होता है उसको यज़ीदी कहते हैं। नवा-सए-रसूल इमाम हुसैन रज़ि0 के क़ातिलों से हमदर्दी रखने वालों को भी आम तौर से मुसलमान यज़ीदी कह कर ही मुखातब करते थे। ईरान, ईराक़ जंग के दौरान मुझे ये भी मालूम हुआ कि ईराक़ के कुछ दूरउफतादा इलाक़ों में पाँच छह लाख यज़ीदी आबाद हैं और उनके बारे में हमने यही सुना था कि ये सब उमवी हुकमरां यज़ीद बिन मुआविया रज़ि0 के मानने वाले हैं। लेकिन 2007 में पहली बार मुझे ये बात मालूम हुई कि यज़ीदी लोगों का यज़ीद से दूर दूर तक कोई तअल्लुक़ नहीं है। बल्कि ये एक बहुत पुराना मज़हब है। जिसकी जड़ें ज़रतुश्ती मज़हब से मिलती हैं। और उनका असली नाम एज़दी है। और कसरते इस्तेमाल की वजह से इस क़ौम को यज़ीदी कहने लगे। यज़ीदियों की तरफ मेरी तवज्जे उस वक़्त मब्जूल हुई। जब 7 अप्रैल 2007 को ईराक़ से यह खबर आई कि वहां एक यज़ीदी लड़की को एक सुन्नी लड़के से शादी करने की वजह से संगसार कर दिया गया। इस दिल दहला देने वाले वाक़िये का वीडियो (यू ट्यूब) पर आज भी दस्तयाब है। इस वाक़िये की तफसील यूँ बयान की गई थी। कि नैनवा सूबे के "बईशक़ा" क़स्बे में रहने वाले एक यज़ीदी खानवादे की 17 साल की "दुआ अस्वद खलील" नाम की लड़की के संगसार करने की खबर आई उस लड़की ने कुछ महीने पहले मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो कर "मौसल" के एक सुन्नी नवजवान से शादी कर ली और घर से फ़रार हो गई थी जब काफी दिन गुज़र गये तो उस लड़की का निकाह पढ़ाने वाले सुन्नी मुफ़्ती ने उससे कहा कि अब उसके वालदैन की नाराज़गी दूर हो गई है और उसकी माँ ने मुफ़्ती को यक़ीन दिलाया है कि उन्होंने "दुआ" को माफ कर दिया है। उस यज़ीदी लड़की को नहीं मालूम था कि उसके वालदैन ने सुन्नी मुफ़्ती से झूठ बोल कर उसको जाल में फंसाने की साज़िश रची है। मुफ़्ती साहब से बात करने के बाद "दुआ अस्वद ख़लील" नैनवा के बईशक़ा क़स्बे में अपने माँ बाप से मिलने के लिए वापस लौट आई। 7 अप्रैल 2007 को दुआ ख़लील वापस लौटी और उसी दिन उसको यज़ीदियों के एक गिरोह ने घर से निकाल कर शहर की गलियों में घसीटा और पूरी आबादी के लोग उस पर पत्थर फेंकने लगे। और तब तक पत्थर फेंकने का यह सिलसिला ज़ारी रहा जब तक की दुआ अस्वद मर नहीं गई। एक यज़ीदी

नवजवान ने इस पूरे क़िस्से का वीडियो अपने मोबाइल के ज़रिए बनाया और उसको बड़े फ़ख़्र से यूट्यूब और फेसबुक पर अपलोड किया। दिलचस्प बात यह है कि दुआ अस्वद जिस क़स्बे की रहने वाली थी उसका असली नाम बैते आशिक़ाँ था जो बाद में बईशका कहलाने लगा लेकिन उस बैते आशिकां की किसी लड़की को यह हक़ नहीं था कि वह सिकी ग़ैर यज़ीदी लड़के से इश्क़ करे। सुन्नी मज़हब अख़्तियार कर लेने वाली उस लड़की को संगसार किये जाने की वजह से इलाक़े के सुन्नी बहुत ज़ियादा नाराज़ थे। उन्होंने इसका इंतक़ाम लेने का फैसला किया। और 23 अप्रैल 2007 को मौसल के क़रीब वाक़े एक फैक्ट्री में काम करने वाले वर्कर को ले जा रही बस को रोक लिया और उसमें बैठे ईसाइयों और यज़ीदियों को बाहर निकाला उन्होंने ईसाइयों को तो अलग कर दिया मगर बस में सवार 23 यज़ीदियों को क़त्ल कर दिया इन हलाकतों के खिलाफ़ यज़ीदियों ने ज़बरदस्त एहतिजाज किया और बईशका की पूरी आबादी सड़कों पर आ गई। जिसके बाद सुन्नियों और कुर्दों को इलाक़े से फ़रार अख़्तियार करना पड़ा। इधर मौसल यूनिवर्सिटी में तालीम हासिल करने वाले आठ सौ यज़ीदियों को भी फ़साद के ख़ौफ की वजह से अपनी पढ़ाई छोड़ कर भागना पड़ा था। इन वाक़ियात की खबरें उर्दू अख्बारों में तो छपी नहीं या छपीं तो इस तरह छपीं कि पढ़ने वालों को कुछ पता ही न चला कि मामला क्या है। हम जैसे लोग जो सी एन0एन0, बी0बी0सी0 और अल ज़ज़ीरा चैनलों की खबरें देखते हैं या मुख़्तलिफ़ वेबसाइटों पर जाते हैं वह अलबत्ता यह जानने को बेचैन थे कि आख़िर यज़ीदी कौन हैं और उनके दिल में इतनी नफ़रत क्यों है कि वह एक सुन्नी लड़के से शादी करने की पादाश में अपनी ही लड़की को संगसार कर सकते हैं। मैंने यज़ीदियों के बारे में जानने की बहुत कोशिश की लेकिन कोई किताब न मिली।

यज़ीदियों का बदनामे ज़माना उमवीं हुकमरां यज़ीद बिन मुआविया रज़ि0 से कुछ लेना देना नहीं है। और न ही उनको यह नाम ज़ुल्मो सितम की अलामत के तौर पर दिया गया। यज़ीदियों का ईरान के क़दीम ज़रतुश्ती मजहब से गहरा तअ़ल्लुक है। और उनके अक़ायद पारसियों से काफी मिलते जुलते हैं। उनकी ज़बान को करमान्जी कहा जाता है। जो कुर्दों की जबान भी है। अपनी ज़बान के अलावा यह लोग अरबी भी बोलते हैं। यज़ीदियों की सबसे बड़ी तादाद ईराक़ में आबाद है जहां उनकी आबादी 650 लाख के क़रीब है। ईराक़ में भी उनकी आबादी का सबसे बड़ा हिस्सा नैनवा में रहता है। इसके अलावा शाम में 60 हज़ार, जर्मनी में 50 हज़ार, रूस में 45 हजार, आर्मीनिया में 35 हज़ार, जारजिया में 20 हज़ार, स्वीडन में 4 हज़ार, युक्रेन में 3 हज़ार, और डेनमार्क में कुल 500 यज़ीदी आबाद हैं। इस

तादाद को देख कर कहा जा सकता है कि यज़ीदियों की असली सर जमीन ईराक ही है। जहां वह सदियों से आबाद हैं। यह लोग वहां कब्ले इस्लाम से रहते चले आये हैं। लेकिन इस्लाम का नूर फैलने के बाद इनका मुसलमानों से कभी कोई टकराव होने का कोई तारीख़ी सुबूत नहीं मिलता। यह लोग बहुत गुमनामी की ज़िन्दगी बसर करते रहे और अगर शाम और ईराक़ में एक नई खिलाफ़त बनाने का इरादा लेकर अबू बक्र बग़दादी के जंग जूओं ने उन पर बे पनाह मज़ालिम न ढाये होते और उनको जबरी तौर पर मुसलमान बनाने की कोशिश न की होती तो अब भी शायद दुन्या के लोगों को यज़ीदियों के बारे में कुछ पता न चलता यज़ीदी अपने खुंदा को "एजद" या "ऐज़्दाँ" कहते हैं। और उसी मुनासिबत से उनको एज़दी या यज़्दानी कह कर मुखातब किया जाता रहा है।

अंग्रेज़ी में इस मज़हब को "यज़दाँ इज़्म" कहते हैं। उनका अक़ीदा है कि इस दुन्या को खल्क़ करने वाला खुदा एक ही है लेकिन उसने दुन्या का काम काज चलाने की गरज से 7 फरिश्तों को मामूर किया है। जिनकी सरदारी "मलकुत्तावूस" के पास है। यानी मोर जैसे पर रखने वाले फ़रिश्ते को सबसे ज़ियादा अहमियत हासिल है। मग़रिबी मुहक़्ककीन का कहना है कि यज़ीदी मज़हब किसी एक खास मज़हब से टूट कर अलग नहीं हुआ है। लेकिन उसके मानने वालों के अक़ाइद पर इलाक़े के मुख्तलिफ़ मज़ाहिब का कुछ न कुछ असर ज़रूर पड़ा है मुहक़्ककीन का कहना है कि इस मज़हब के मानने वालों के अक़ायद में ज़रतुश्ती मज़हब के अलावा कदीम अहद के फितरत पसंदाना नज़रियात, मसीही और इस्लामी अक़ायद की झलकियां भी जा बजा दिखायी पड़ती हैं। मग़रिबी मुहक्ककीन की अगर मानें तो उनका कहना है कि अरब ममालिक में बसने वाले कई मज़हबों के पैरोकारों ने यज़ीदयों को शैतान की पैरवी करने वाला क़रार देने की कोशिश की है। उनका कहना है कि यज़ीदी जिस मलकुत्तावूस को मानते हैं वह इब्लीस का ही एक नाम है। इसलिए इसका माना ये हुआ कि शैतान उनका सबसे बड़ा देवता है। मगर यज़ीदी इस बात से इन्कार करते हैं और कहते हैं कि मलकुत्तावूस नाम का फरिश्ता शैतान नहीं है जबकि यज़ीदियों को शैतान की पैरवी करने वाला करार देने वालों का कहना है कि यज़ीदियों ने मलकुत्तावूस को आदमो हव्वा के मआमले में जो रवय्या अख़्तियार करते हुए अपनी किताबों में दिखाया है। वह बिल्कुल वही है जो शैतान ने हुक्मे इलाही की ख़िलाफ़ वर्जी करते हुए इख्तियार किया था। यजीदियों का कहना है कि मलकुत्तावूस शैतान का नुमाइन्दा नहीं है। बल्कि मलाइक का सरदार है। यज़ीदी अपनी बात में

पुख़्तगी पैदा करने के लिए यह भी कहते हैं कि आदम की बलन्दी को कुबूल न करके मलकुत्तावूस ने सर उठा कर जीने की मिसाल पेश की उनका कहना है कि अगर खुदा वन्दे आलम चाहता तो वह शैतान को आदम के बलन्द होने की बात कुबूल करने पर मजबूर कर सकता था। लेकिन यज़दाँ ने ऐसा नहीं किया बल्कि मलकुत्तावूस की इन्कार करने वाली सलाहियतों का इम्तिहान लिया उनका यह भी कहना है कि बदी और नेकी इंसानों के जिस्मों में मौजूद होती हैं। उसका फरिश्तों के बहकाने या समझाने से कुछ लेना देना नहीं है। यज़ीदियों का कहना है कि उनके खुदा यज़्दाँ ने मलकुत्तावूस को इस बात की आज़ादी दी थी कि वह आदम को अपने से ज़ियादा अशरफ़ समझे या न समझे इस तरह यज्दां मलकुत्तावूस के अंदर मौजूद नेकी और बदी की ताक़तों का इम्तिहान लेना चाह रहा था। दुन्या में आज जितनी क़ौमों के भी कैलेण्डर मौजूद हैं उनमें सबसे पुराना कैलेण्डर यज़ीदियों का है। उनके कैलेण्डर के हिसाब से आज कल 7764 वाँ साल चल रहा है। इसके हिसाब से अगर देखा जाये तो उनका कैलेण्डर 5750 साल कब्ल मसीह शुरु हुआ था। ये कैलेण्डर ही अपने आप में इस बात का गम्माज़ है कि एज़्दी फिरक़ा दुन्या की क़दीम तरीन मज़ाहिब में सरे फहरिस्त है। यज़ीदियों का यह भी अक़ीदा है कि अल्लाह ने सबसे पहले अपने नूर से मलकुत्तावूस को ख़ल्क़ किया। यानी मलकुत्तावूस ही खुदा की सबसे अव्वलीन तख्लीक़ है। यज़ीदियों के अक़ाइद के मुताबिक़ मलकुत्तावूस के इरशादात और फरमूदात पर मबनी एक किताब ईराक़ के एक क़स्बे के मअबद में बहुत ही खुफ़्या तरीक़े से रखी गयी है उसको आम तौर से लोग यज़ीदी (ब्लेक बुक) स्याह किताब भी कहते हैं। जो किसी को देखने को नहीं मिलती। अलबत्ता उसमें तहरीर बहुत से अक़वाल को मक़ामी रहनुमाँ मज़हबी इज़तिमाआत में पेश करते हैं। यज़ीदी किताबे सियाह के अलावा "किताबुल्जल्वह" के नाम से भी यज़ीदियों की एक मुकद्दस किताब है। जिसमें मलकुत्तावूस की कही हुई बातें तहरीर हैं। इसी मलकुत्तावूस ने कहा है कि जब आदम और हव्वा जन्नत में रहते थे तो मैं मौजूद था, और मैं उस वक्त भी मौजूद था जब नमरूद ने इब्राहीम को आग में फेंका था। मैं उस वक़्त भी था जब खुदा ने मुझसे कहा तुम ज़मीन पर मेरे खलीफ़ा हो और उसके हाकिम हो, मलकुत्तावूस ने कहा कि उसको खुदा ने हफ़्त आलम की हुकमरानी अता की। और उसको जन्नत का हाक़िम मुक़र्रर किया। यज़ीदियों को इन्हीं बातों की वजह से ज़ियादा तर लोगों ने ये माना कि वह इब्लीस को ही मलकुत्तावूस कहते हैं इसमें कोई शक नहीं कि इब्लीस

ख़िलक़ते आदम से कब्ल तक बेहतरीन हस्ती था। लेकिन अल्लाह की हुक्म अ़दूली करने की वजह से न सिर्फ ये कि जन्नत से निकाला गया बल्कि अल्लाह की सबसे ना पसंदीदा मख़लूक़ क़रार पाया।

यज़ीदियों के अक़ायद में बौद्ध, हिन्दू और जैन मज़हब की तरह आवागमन का फलसफा भी शामिल है। यानि इन्सान इस दुन्या में दोबारा जन्म लेता है।

यज़ीदियों के अ़कायद पर जहां नसरानियों, पारसियों और ख़ित्ते के दूसरे मजाहिब के असरात मुरत्तब हुए हैं वहीं दूसरी जानिब इस्लाम की सूफी शाख से भी यज़ीदी बहुत मुतअस्सिर हुए हैं। तसव्वुफ में यज़ीदियों को बहुत दिलचस्पी है। और ये दिलचस्पी इस हद तक बढ़ गई है कि ईराक के पहाड़ी इलाक़े में फैले सूफी सिलसिले "अ़दविया" के बुज़ुर्गों से ये लोग बहुत क़रीब हो गये। यहां तक कि बनु उमय्या से तअ़ल्लुक़ रखने वाले एक सूफी बुज़ुर्ग शेख अ़दी बिन मुसाफिर को ये लोग अपना रहनुमा मानने लगे। जिन्होंने मौसल से तक़रीबन 36 मील दूर लाली की वादी में बारहवीं सदी में क़ियाम किया था। शेख अदी बिन मुसाफिर का 1162 ई0 में इन्तिक़ाल हुआ। कहा जाता है कि यज़ीदियों ने उनकी क़ब्र पर एक मक़बरा भी तामीर किया और बाद में उसको अपनी अहम तरीन इबादतगाह बना लिया। इसके अलावा भी यज़ीदी उस इलाक़े के 6 सूफियों से खास अक़ीदत रखते हैं। और उनकी मज़ारों को उन्होंने हफ़्तुलअ़जाइब (सात अजूबों) का नाम दिया है। हर साल सितम्बर के महीने में शेख अ़दी बिन मुसाफिर के मक़बरे पर यज़ीदियों का सबसे बड़ा त्योहार मनाया जाता है। जहां जाने से क़ब्ल वो गुस्ल करते हैं। और मलकुत्तावूस की मूर्तियों को नहला धुला कर सजाते हैं। फिर शेख अ़दी की मज़ार पर चिराग़ रौशन करते हैं और पहाड़ी बैल की कुर्बानी देते हैं। यह त्योहार 23 सितम्बर से पहली अक्टूबर तक चलता है। यज़ीदी मज़हब के लोग दिन में पाँच बार इबादत भी करते हैं। इनमें से एक सूरज निकलने से पहले, दूसरी सूरज निकलने के बाद, तीसरी दोपहर को, चौथी तीसरे पहर और पांचवीं सूरज ग़ुरूब होने के बाद अंजाम देते हैं। ये लोग इबादत से पहले मुंह हाथ धेते हैं। लेकिन उनकी इबादत में खास शर्त ये हैं कि जब इबादत की जा रही हो तो कोई ग़ैर मौजूद न हो इसलिए किसी को यह बात मालूम न हो सकी कि यज़ीदी इबादत किस तरह करते हैं। ये लोग किसी मज़हब के साथ रब्त ज़ब्त रखने के क़ाइल नहीं हैं। खास कर मुसलमानों से खुद को बहुत दूर रखते हैं। और ऐसे लोगों को सख़्त सज़ाऐं दी जाती हैं जो मुसलमानों में शादी करलें। उनका मानना है कि दूसरी क़ौमों में शादी करने से यज़ीदियों की नस्ल ख़राब हो जाती है।

खाने पीने की चीज़ों में भी ये लोग बहुत एहतियात बरतते हैं। खास तौर पर उनके मज़हबी

रहनुमा उन तमाम सब्ज़ियों और अनाज़ों से परहेज़ करते हैं जिनमें फुज़ले से बनी खाद इस्तेमाल की गयी हो। बहुत से यज़ीदी मुर्ग़ और हिरन का गोश्त भी नहीं खाते हैं। एक बड़ी दिलचस्प बात ये है कि यज़ीदी मज़हब के लोगों के यहाँ नीले रंग के कपड़े पहनना हराम है। इसकी वजह किसी को नहीं मालूम, लेकिन कुछ लोगों का कहना है कि चूंकि तूफाने नूह में नीले रंग का पानी था इसलिए यज़ीदी समझते हैं कि नीला रंग तबाही की अलामत है। यज़ीदियों के यहां बच्चों का खत्ना किये जाने का भी रवाज है लेकिन ये लाज़मी नहीं है। जो माँ–बाप चाहें वह अपने बच्चे का खत्ना करावायें और जिनका दिल न चाहे वह न करायें। इसकी आज़ादी है। उनके यहां मुर्दों को पहले से खुदी हुई क़ब्रों में जल्द अज़ ज़ल्द दफनाने का चलन है। यज़ीदी अपने मुर्दों को सीने के आर पार हाथ रख कर दफन करते हैं। और मुर्दों के साथ खाने पीने की चीजें खास तौर पर ताज़ा फल कब्र में रखते हैं। यज़ीदियों का एक निहायत दिलचस्प अक़ीदा यह भी है कि अब जहन्नम मौजूद नहीं है। क्योंकि उनके एक मज़हबी पेशवा ने इंसानों पर होने वाले मज़ालिम पर इस क़द्र आँसू बहाए कि जहन्नम की आग बुझ गयी। और अब कोई इन्सान भी जहन्नम में नहीं जायेगा। यज़ीदियों का अक़ीदा यह भी है कि कोई उनका मज़हब इख़्तियार नहीं कर सकता बल्कि सिर्फ पैदाइशी तौर पर कोई शख़्स यज़ीदी हो सकता है। एक मज़ेदार अक़ीदा ये है कि यज़ीदियों और दूसरे इन्सानों में बहुत फर्क़ है। दूसरे इन्सान आदमो हव्वा की औलाद हैं जबकि यज़ीदी सिर्फ आदम की औलाद है और उनका हव्वा से कोई रिशता नहीं है। उनके यहां एक कहानी सुनाई जाती है कि जब अल्लाह ने आदम व हव्वा को ख़ल्क़ कर दिया तो उनको माद्दे तौलीद भी अता किया जिसको दोनो ने अलग अलग मरतबानो में रख दिया एक खास मुद्दत के बाद जब हव्वा ने अपना मरतबान खोल कर देखा तो उसमें पड़ा माद्दे तौलीद ख़राब हो चुका था और आदम के मरतबान में एक खूब सूरत बच्चा बैठा था। उस बच्चे की शादी बाद मे जन्नत की एक हूर से हई और इस तरह से यज़ीदियो की नस्ल आगे बढ़ी। आम यज़ीदी मर्दों को सिर्फ एक औरत से ही शादी करने की इजाज़त है लेकिन मज़हबी रहनुमा एक से ज़ियादा शादी करने का हक रखते हैं। यज़ीदियों के बारे में ईराक़ तुर्की और शाम के लोग तो कुछ–कुछ जानते हैं लेकिन बर्रे सग़ीर के मुसलमानों या मुस्लिम ममालिक के मुसलमानों को उनके बारे में रत्ती बराबर मालूमात नहीं है। ईराक़ में अल्लामा मुहम्मद अश्शह–रुस्तानी ने यज़ीदियों के बारे में एक किताब लिखी है लेकिन वह अरबी में है इसलिए दूसरे मुसलमानों को भी मालूम न हुआ कि ईराक़ में ऐसा कोई मज़हब भी मौजूद है। जिसके मानने वाले को यज़ीदी कहा जाता है। सूफी इज्म पर कई किताबें लिखने वाले मुहक़्क़िक इद्रीस शाह ने अपनी किताब

(Secrets Societies) खुफया मुआशरे में यजीदियों का ज़िक्र किया है। और मलकुत्तावूस के बारे में अपनी राय का इज़हार किया है। फिर भी मुसलमानों को उनके बारे में बहुत कम मालूमात हैं और उनके बारे में तरह तहर की अफवाहें फैलाई जाती हैं इन अफवाहों की बड़ी वहज ये है कि यज़ीदी अपने मजहबी अकाइद के बारे में दूसरे मज़ाहिब से तअल्लुक़ रखने वाले लोगों से गुफतुगू नहीं करते। वह सदियों से ईराक़ में आबाद हैं। और कई बार मुसलमानों के साथ उनका तसादुम भी हुआ है बारहवीं सदी में मुस्लिम बादशाहों से उनका टकराव हुआ फिर खिलाफते उस्मानिया के साथ यज़ीदियों की लड़ाई हुई। ईराक़ की हुकूमतों का इताब भी कई बार उन पर नाज़िल हुआ। 2007 में यज़ीदियों के अकसरियत वाले इलाकों में बहुत से बम धमाके हुए लेकिन उन सबसे ज़ियादा बड़ा धमाका दाइश ने किया। और उनका जीना दुशवार कर दिया। बन्दूक़ की नोंक पर सबको मुसलमान बनाने की कोशिश की। उनकी औरतों को अगवा कर लिया। और जो हाथ नहीं लगे उनको पहाड़ों में जान बचाने के लिए छिपने पर मजबूर कर दिया। अब दाइश को कौन समझाये कि कुर्आन करीम में अल्लाह ने फरमाया है कि दीन में जब्र नहीं है (2/256) और जबरदस्ती किसी को मुस्लिम बनाने की रिवायत इस्लाम में नहीं रही है। लेकिन यहूदो नसारा की तरबियतगाहों से निकलने वाले दाइश के जंगजू ये बात कहाँ समझेंगे।

(उर्दू मासिक "हिदायत" दिसम्बर 2014 जयपुर से ग्रहीत)

———

कठिन शब्दों के अर्थ–

मुलव्विस= लिप्त, दूरउफ़्तादा= दूर पड़ा हुआ, ज़रतुश्त= आग पूजने वालों (पारसियों) का सन्देष्टा। ज़रतुश्ती= पारसी, अजद= पारसियों का खुदा, इताब= प्रकोप, अजदी= पारसी, संगसार= पत्थरों से मार मार कर मार डालना, खनवादा= खानदान, कुल, इन्तिकाम= बदला, मा–दए–तौलीद= वीर्य, यज़्दा= पारसियों का खुदा, मलक (फरिश्ता)= एक सृष्टि है जिसको अल्लाह ने नूर से रचा है। ताऊस= मोर, अशरफ= श्रेष्ठ, ग़म्माज़= संकेतक, खिलकत= रचना, हुक्म अ़दूली= अवज्ञा, सूफी= ईश भक्ति, तसव्वुफ= ईश भक्ति दर्शन, फुज़्ला= पाखाना (मल), तसादुम= टकराव।

ईद मुबारक.................

इमाम खुत्बे के बाद दुआ मांगते हैं। आप का इमाम जब दुआ करे आप भी उसमें शरीक हों इख़्तिलाफ़ न करें, इसी तरह आमतौर से लोग नमाज़ के बाद एक दूसरे से गले मिलते हैं अगरचि इस का सुबूत दौरे अव्वल में नहीं मिलता मगर इसमें शिद्दत न चाहिए।

नमाज़ के बाद मुम्किन हो तो वापसी का रास्ता बदलदें कि ऐसा करना सुन्नत है, अब आप अपने दोस्त अहबाब से मिलें मिलाएं दावतें खाएं खिलाएं, वतनी भाइयों का भी मुँह मीठा करें ख़ूब ख़ुशियां मनाएं लेकिन गुनाह के कामों से ख़ुशियां न मनाएं।

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः अगर कोई मुसलमान गुनाह के काम करता हो और दीनी कामों से दूर रहता हो उससे सम्बन्ध तोड़ना जाइज़ है या नहीं?

उत्तरः ऐसे व्यक्ति से थोड़े दिनों का सम्बन्ध तोड़ना उस वक्त जाइज़ है जब यह मालूम हो कि सम्बन्ध तोड़ने से उसको दुख होगा और वह गुनाह के काम छोड़ देगा, परन्तु अगर इसकी उम्मीद न हो तो सम्बन्ध बाक़ी रख कर हिकमत से उसके सुधार की कोशिश करते रहना चाहिए।

प्रश्नः अगर कोई शख्स शादी के बाद के झमेलों से बचने के लिए निकाह न करे तो कोई गुनाह तो न होगा?

उत्तरः जो शख्स निकाह की ताक़त रखता है और बीवी को रोटी कपड़ा मकान देने की ताक़त रखता है उसके लिए निकाह करना सुन्नते मुअक्किदा है, निकाह की ताकत रखते हुए निकाह न करना बहुत बुरा है, निकाह के खुत्बे में एक हदीस आम तौर से पढ़ी जाती है जिसका अनुवाद है, जिसने मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ा वह मुझ से नहीं है अर्थात मेरी उम्मत से नहीं है, इस हदीस से मालूम होता है कि ताकत रखते हुए निकाह न करने वाले अपनी महरूमी को खूब समझ सकते हैं, अलबत्ता जो इतना निर्धन हो कि बीवी का खर्च न उठा सकता हो या उसकी निर्धनता के कारण कोई लड़की उससे निकाह को तैयार न हो तो वह रोज़े रख कर अपने नफ़्स पर काबू रखे ऐसी सूरत में उस पर कोई गुनाह नहीं।

प्रश्नः निकाह से पहले लड़की को देखना कैसा है?

उत्तरः अगर किसी लड़की से निकाह का इरादा हो तो उसको निकाह से पहले देखना जाइज़ है, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैकहि व सल्लम ने बाज़ सहाबा को निकाह से पहले मंगेतर को देखने को फरमाया था, अगर लड़की देखने के बाद उस लड़की से निकाह न करने का फैसला हो तो निकाह न करे, मगर लड़की का कोई ऐब बयान न करे। किसी के पूछने पर बस इतना कहे कि मेरा दिल नहीं तैयार हुआ मैं ने निकाह नहीं किया, लेकिन खूब सोच समझ लें कि वह इरादा पुख्ता हो जाए तभी लड़की को देखें और उससे निकाह करें। देखने के बाद निकहा न करना अच्छा नहीं है।

प्रश्नः इस्लाम में बारात का क्या हुक्म है?

उत्तरः इस्लाम में निकाह के लिए आजकल जो बारात का रवाज है इस का इस्लाम में कहीं जिक्र नहीं है। अगर निकाह लड़की की कियामगाह के करीब हो और वह लड़के के घर से दूर हो तो लड़के के साथ अगर उसके चार छः अहबाब चले जाएं तो कोई हरज नहीं लेकिन धूम धाम से बारात ले जाना इस्लामी शरीअत में नहीं है, बस चाहिए

कि निकाह का एलान हो और दीनदारों की एक मुख्तसर मजलिस में निकाह हो।

प्रश्नः निकाह के बाद दूल्हा, दुल्हन के घर आंगन में जाता है वहां औरतें जमा होती हैं, दूल्हा सबको सलाम करता है, औरतें उसे नक्द इनआम देती हैं, बाज जगह दूल्हे से गरी का गोला कटवाया जाता है यह रस्में कैसी हैं?

उत्तरः दूल्हे का ना महरम औरतों में जाना उनको देखना उनको सलाम करना व कराना, औरतों को दूल्हे को देखना यह सब नाजाइज़ और गुनाह के काम हैं। और दूल्हे से गरी कटवाना, नारियल तोड़ने जैसी गैर मुस्लिमों की रस्म है और नाजाइज़ है।

प्रश्नः दुल्हन जब ससुराल जाती है तो वहां मुंह दिखाई की रस्म अदा की जाती है इसका क्या हुक्म है?

उत्तरः दुल्हन जब ससुराल गई तो घर की औरतें उसको देखती हैं, और पास पड़ोस की औरतें या रिश्तेदारों की औरतें उससे मिलने आएं तो इसमें कोई हरज नहीं लेकिन बाकाइदा मुंह दिखाई की रस्म अदा करना फुजूल रस्म है जिसका शरीअत में कहीं जिक्र नहीं, और मुंह दिखाई में गैर महरम मरदों को दुल्हन को देखना हराम है।

प्रश्नः एक मुसलमान का गैर मुस्लिम औरत से निकाह करना कैसा है?

उत्तरः गैर मुस्लिम औरत अगर किताबी है यानी ईसाई मज़हब या यहूदी मज़हब रखती है और वही और नुबूवत को मानती है तो उससे निकाह दुरुस्त है लेकिन दूसरी गैर मुस्लिम औरतों से जब तक वह ईमान न लायें निकाह दुरुस्त नहीं इसी तरह मुसलमान औरत का निकाह किसी गैर मुस्लिम मर्द से, जब तक वह ईमान न लाये जायज़ नहीं चाहे वह मर्द ईसाई या यहूदी हो। किताब व सुन्नत से यही बात मालूम होती है।

प्रश्नः क्या मुतअय्यन (निर्धारित) वक्त के लिए निकाह करना दुरुस्त है? कुछ लोग कारोबार या नौकरी में कई कई साल बाहर रहते हैं अगर वह अपने को गुनाह से बचाने के लिए किसी औरत से वक्ती निकाह कर लें तो जाइज़ होगा या नहीं?

उत्तरः इस्लाम के आरम्भ में जरूरत से वक्ती निकाह की इजाज़त थी उसको मुतअः कहते थे बाद में अल्लाह तआला की तरफ से इसके हराम होने का हुक्म आ गया और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको हमेशा के लिए हराम होने का एलान कर दिया अब वक्ती निकाह जाइज़ नहीं, जो लोग कई कई साल बाहर रहते हैं अगर वह वहां किसी औरत से निकाह करना चाहें तो दाइमी (स्थाई) निकाह करें या फिर रोज़े रख कर अपने नफ़्स पर काबू पायें, वक्ती निकाह (मुतअः) हराम है।

प्रश्नः एक से ज़ियादा औरत से निकाह करने का क्या हुक्म है?

उत्तरः अगर मर्द में ताकत है और बीवियों का खर्चा उठा सकता है तो चार औरतों तक निकाह करके एक साथ रख सकता है शर्त यह है कि उनमें

इन्साफ कर सके अगर डर हो कि इन्साफ न कर सकेगा तो दो औरतों से भी एक वक्त में निकाह न करे, एक ही बीवी रखे कुर्आन मजीद में आया है कि, अनुवाद "अगर डर हो कि (एक से ज़ियादा) बीवीयों में इन्साफ न कर सकोगे तो एक ही पर इक्तिफा करो"।

(अन्निसा: 3)

प्रश्न: मौजूदा दौर में गैर मुस्लिम लोग भी कुर्आन पढ़ना चाहते हैं मगर अरबी न जानने के सबब उनको कुर्आन पढ़ने में कठिनाई होती है, क्या उनके लिए उनकी भाषा की लिपि में जैसे हिन्दी, गुजराती या अंग्रेजी में कुर्आन के अलफ़ाज़ लिखना जाइज है या नहीं?

उत्तर: कुर्आन अल्लाह तआला की आखिरी आसमानी किताब है, जो आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हज़रत जिब्रील के वास्ते से उतरी है, उस वक्त से अब तक उन्हीं अल्फाज़ व हुरुफ में मौजूद और महफ़ूज़ (सुरक्षित) है, और कियामत तक हमेशा इसी तरह महफ़ूज़ रहेगी। इसलिए कुर्आने मजीद को जिन अरबी अलफाज़ और हुरूफ में महफूज किया गया था जिसको "रस्मे उस्मानी" कहते हैं, उसी रस्म में छापना अनिवार्य है किसी और ज़बान (भाषा) में छापना जाइज नहीं बल्कि ब इजमाए उम्मत हराम है (इतक़ान लि सियूती जिल्द 2:329) दावती या किसी भी मकसद से उसको गैर अरबी में छापना तहरीफ (परिवर्तन) का दरवाजा खोलना है, शरीअत की निगाह में कुर्आन का कामिल तौर पर महफूज रहना किसी और मकसद के हुसूल से कहीं जियादा अहम है इसलिए बेहतर यह है कि कि कुर्आन का पैगाम गैर मुस्लिमों के दरमियान उनकी ज़बान में पहुंचाया जाये, या अरबी मत्न (मूल) के साथ उसके मआ़नी (अर्थ) मुखातब की जबान में पेश किये जायें, उससे दावती मकसद हासिल हो सकता है।

प्रश्न: मत्ने कुर्आन के बगैर किसी भी ज़बान जैसे अंग्रेज़ी, हिन्दी या मलियालम वगैरह में तनहा कुर्आन का तर्जुमा (अनुवाद) छापा जा सकता है या नहीं? और उसको तक्सीम करना कैसा है?

उत्तर: कुर्आन मजीद वह आसमानी किताब है जिसके हुरुफ व मआनी (अरबी ध्वनि तथा अर्थ) दोनों मुनज्जल मिनल्लाह (अल्लाह की तरफ से उतारे हुए) हैं और दोनों के मजमूए (संग्रह) को कुर्आन कहा जाता है, सिर्फ तन्हा तर्जुमा कुर्आन नहीं है, जम्हूरे उम्मत और सलफे स्वालिहीन का यही फैसला है, इमाम इब्ने तैमिया ने भी यही लिखा है देखिए फतावा इब्ने तैमिया (जिल्द 12:244)।

इस्लामिक फिक्ह अकेडमी के सेमीनार एक ता तीन मार्च 2015 में जो तजावीज़ पास हुई हैं उनमें तजवीज़ न0 2 की इबारत इस तरह है "मत्ने कुर्आन के बगैर किसी भी ज़बान में तन्हा तरज–मए–कुर्आन की

इशाअ़त नाजाइज़ है लिहाज़ा उसे खरीदना, तक्सीम करना हदीया करना दुरुस्त नहीं है"।

प्रश्न: टीवी की मरम्मत का काम करके रोजी कमाना कैसा है?

उत्तर: टीवी एक आला (यंत्र) है जिसके द्वारा बहुत ही अशलील बातें भी दिखाई जाती हैं तथा बहुत ही काम की और लाभदायक बातें भी प्रस्तुत की जाती हैं अतः उसकी मरम्मत का काम और उस काम पर मिलने वाला पैसा जाइज (वैध) है परन्तु आज कल प्रायः टीवी द्वारा अशलील बातें प्रस्तुत की जाती हैं तथा आचरण बिगाड़ने वाले दृश्यों की भरमार होती है अतः ऐसे काम से बचना ही अच्छा है, कुर्आन में आदेश दिया गया है कि बुरे कामों में सहयोग न दो।

(देखिए सू–रए–माइदा आयतः 3)

प्रश्न: कैमरे की मरम्मत का काम करके रोज़ी कमाना कैसा है?

उत्तर: कैमरे से ना जाइज तस्वीरें भी ली जाती हैं और जाइज भी, नीज काम की तस्वीरें भी ली जाती हैं इसलिए कैमरे की मरम्मत करके रोज़ी कमाना दुरुस्त है लेकिन कैमरों से अधिकतर नाजाइज तस्वीरें ली जाती हैं इसलिए कैमरों की दुरुस्ती का काम न करना ही बेहतर है। ◻◻

हिन्दुस्तानी मुसलमान

आया है या ऐसे अनवरत् रूप से सिद्धि एवं व्यावहारिकता के साथ लोक जीवन का अंग बन गया है अथवा उसको धार्मिक विद्वान सर्व सम्मति से मान्यता प्रदान कर चुके हैं कि उसका इनकार करने वाला अब सैद्धान्तिक एवं वैधानिक रूप से इस्लाम के क्षेत्र से बहिष्कृत समझा जायेगा यद्यपि उसकी व्याख्या एवं व्यवहारिक अनुकूलता में कितना ही समयनाकूल विचार किया जाये, उसमें परिवर्तन एवं संशोधन का कोई प्रश्न ही नहीं आता है। इस विषय में किसी बहुसंख्यक मुस्लिम देश की प्रतिनिधि सरकार तथा उसकी विधान सभा को भी लेश मात्र अधिकार नहीं है और यदि ऐसा किया गया या करने का विचार अथवा प्रयास किया गया, तो वह एक धर्म के अर्थ परिवर्तन की क्रिया तथा धर्म में हठात् हस्तक्षेप समझा जायेगा। अलबत्ता जो प्रसंग (मसायल) इजतिहादी हैं, और जिनमें समय एवं परिस्थितियों के अनुकूल निरन्तर संशोधन अथवा परिवर्तन एवं लचक पैदा की जा रही है, वह फ़िक़्ह में दक्ष विद्वानों एवं मुस्लिम ज्ञानियों द्वारा जो प्रसंगों (मसलों) के इस्तिंबात की योग्यता रखते हैं, अपने विचार एंव अधिकार से तथा गहन विचार विमर्श के पश्चात चिन्तन एवं मनन, आधुनिक परिस्थितियों एवं परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए, उनको समयानाकूल तथा व्यवहारिक जीवन से सम्बद्ध बना सकते हैं। यह प्रक्रिया (Process) इस्लामी इतिहास के हर युग में प्रचलित रही है और मुसलमानों की अन्तिम नस्ल तक आवश्यक है। ◻◻

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों की सुरक्षा हम उर्दू भाषियों का कर्तव्य है

—इदारा

मेरी मातृ भाषा उर्दू है, मैं उर्दू का स्कालर हूँ साथ ही मैं हिन्दी मासिक पत्रिका "सच्चा राही" का सम्पादक हूँ, हमारे बहुत से उर्दू स्कालर हिन्दी के अच्छे लेखक हैं, हमारे बहुत से हिन्दी लेखक तथा कवि अपने हिन्दी लेखों और कविताओं में उर्दू शब्दों का प्रयोग करते हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम उूर्द शब्दों के उच्चारण को हिन्दी लिपि में बाक़ी रखें इस सिलसिले में कुछ आवश्यक बातें यहां लिखता हूं और आशा करता हूं कि हमारे उर्दू स्कालर जो हिन्दी भी लिखते हैं इन बातों पर ध्यान देंगे।

हिन्दी लिपि में उर्दू के कुछ विशेष अक्षर नहीं पाये जाते हैं ना ही हिन्दी भाषी उनके उदगम तथा उच्चारण से अवगत होते हैं वह अक्षर यह हैं—

ح، خ، ذ، ز، ض، ظ، ع، غ، ف، ق

इन अक्षरों को हम उनके सहध्वनि अक्षरों के नीचे बिन्दी लगा कर लिखते हैं जैसे— ح ह़, خ ख़, ذ، ز، ض، ظ (ज़) ع، ی، ئ، ع، غ، ف، ق عَو، عیے، عُو، क़, फ़, ग़, अ़, उ़, ई, ऊ़, ए, औ़ आदि।

बहुत से हिन्दी भाषी इन बिन्दियों को नज़र अन्दाज़ करते हैं परन्तु इन अक्षरों के शुद्ध उच्चारण के संकेत के लिए बिन्दियों के अतिरिक्त और कोई संकेत समझ में नहीं आता।

उर्दू में ع अ़ चार प्रकार से आता है—

(1) आरम्भ में जैसे عَلم अ़लम, عِلم इल्म عید ईद, عثمان उ़स्मान, عُود ऊ़द, عورت औ़रत।

(2) बीच शब्द में गतिशील जैसे: خِلعت ख़िलअ़त, रिफ़अ़त, رِفعت रकअ़त رکعت आदि

(3) बीच शब्द में गतिहीन (साकिन) जैसे काबा या काबः کعبہ नाल, نعل बाद बीच शब्द में अ़ गतिहीन हिन्दी भाषियों के लिए पढ़ने में कठिनाई होगी अतः हम इन शब्दों को आ की मात्रा से लिखने पर विवश हैं अलबत्ता कुछ शब्द "अ" ही से लिखते हैं जैसे: نعت नअ़त, وعظ वअ़ज़ आदि।

(4) शब्द के अन्त में जैसे: اتباع इत्तिबाअ़, انقطاع इन्क़िताअ़, شجاع शुजाअ़ शुरुअ़ شروع तुलूअ़ طلوع आदि।

यह बिन्दियां संकेत हैं केवल उन हिन्दी पढ़ने वालों के लिए जो उर्दू अक्षरों के उच्चाराण से भली भांति अवगत हैं या अवगत होना चाहते हैं।

उर्दू के बीच शब्द के साकिन अक्षरों को हिन्दी के आधे अक्षर से लिखते हैं। परन्तु यदि गतिशील अक्षर से पहले गतिहीन (साकिन) अक्षर हो तो उसको आधा भी लिख सकते हैं और पूरा भी जैसे: कल्मा, कलमा, बस्ता, बसता, हल्वा, हलवा आदि लेकिन बीच का अक्षर जो दो बार पढ़ा जाए (तशदीद) वाला उसमें साकिन को आधा ही लिखेंगे जैसे, ग़ल्ला, हुक़्क़ा, गुस्सा आदि अगर किसी कारण साकिन अक्षर को पूरा लिखेंगे तो हलन्त लगाना आवश्यक होगा।

शेष पृष्ठ......33.... पर

अमरीका के सद्र बराक ओबामा की दादी और चाचा ने उमरा अदा किया

अमरीकी सद्र बराक ओबामा की दादी साइरा उमर और चचा सईद ओबामा ने उमरे की सआदत हासिल कर ली, अरब मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक बराक ओबामा की दादी साइरा उमर चन्द रोज़ कब्ल अपने बेटे सईद ओबामा और पोते मूसा ओबामा के हमराह उमरे की अदायगी के लिए हिजाज़े मुक़द्दस पहुंचीं, मीडिया से बात करते हुए उनका कहना था कि कुर्आन पाक और नबी–ए–करीम की सुन्नते मुबारका हमें बरदाश्त और सब्र का दर्स देती है, उन पर अमल ही इन्सान की राहे नजात है, साइरा उमर का कहना था कि सऊदी हुकूमत की जानिब से मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा में हुज्जाजे किराम और उमरा करने वालों की सुहूलतों के लिए किये गये इन्तिजामात इन्तिहाई आला हैं, उनकी नज़र में मौजूदा दौर में इस्लाम की तरवीज का यह सबसे अहसन तरीका है, उन्होंने उम्मीद का इजहार भी किया कि दीगर ममालिक भी सऊदी हुकूमत के ताआवुन से इस किस्म की नुमाइश का एहतमाम करेंगे, जिससे इस्लाम के हवाले से पाई जाने वाली ग़लत फहमियों को दूर करने में आसानी होगी।

(दैनिक राष्ट्रीय सहारा उर्दू 24.04.2015)

हिन्दी लिपि में ....

हमारे कुछ हिन्दी लेखक उर्दू के कुछ शब्दों को हिन्दी में अशुद्ध लिखते हैं जैसेः दुन्या, बुन्याद, इन दोनों शब्दों में (न) साकिन है इसको इ की मात्रा देकर दुनिया तथा बुनियाद लिखना अशुद्ध है।

ज़ियादा में (ज़) इ की मात्रा (ज़ेर) से मुतहर्रिक (गतिशील) है उसको (य) में मिलाकर (मुदग़म) करके ज़्यादा लिखना अशुद्ध है।

खयाल का (ख) जबर से गतिशील है उस पर कोई मात्रा न लगेगी उसको (य) में मुदग़म करके ख्याल लिखना अशुद्ध है।

महब्बत में मीम पर जबर है अतः म, में उ, की मात्रा देकर मुहब्बत लिखना अशुद्ध है। कुरआन में (अ) मुतहर्रिक है अतः कुरान लिखना अशुद्ध है । इसी प्रकार और भी शब्द हो सकते हैं। परन्तु यह अशुद्धता न कोई पाप है न अपराध अपितु मेरे निकट एक शुत मत है जिसका मन चाहे इस मत से सहमत हो या इसे ठुकरा दे किन्तु मैं यह अवश्य कहूंगाकि उर्दू शब्दों को अशुद्ध लिखना तथा अशुद्ध बोलना उर्दू के सिर पर आरा चलाना है जिस पर न कोई दण्ड इस लोक में मिलेगा न परलोक में हिन्दी में लिखी मेरी यह बातें तो उर्दू के हितैषियों तक पहुंच भी न पायेंगी। अतः हिन्दी में मेरा ये रोना अपने दीदे खोना है।

अज़ान (बांग)

—इदारा

एक टीचर का प्रश्न आया कि मैं कक्षा में कबीर दास का यह दोहा पढ़ा रहा थाः

कांकर पाथर जोरि कै मस्जिद लई बनाय
ताचढि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय

इस पर मुस्लिम छात्रों ने आपत्ति की परन्तु वह इस विषय पर शुद्धिज्ञान न रखते थे मुझे भी इस विषय में ठीक ज्ञान नहीं है। अतः आपसे अनुरोध है कि इस विषय पर प्रकाश डालें। उनको जो उत्तर दिया गया वह निम्नलिखित है–

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के अन्तिम रसूल (संदेष्टा) हैं, आपकी सारी शिक्षाएं ईश्वर (अल्लाह) के आदेशानुसार होती हैं।

आपने बताया कि मुसलमानों पर पाँच समय की नमाज़ें अनिवार्य हैं यह अनिवार्य नमाज़ें मर्दों के लिए मस्जिद में सामूहिक रूप से (जमाअत से पढ़ना अनिवार्य है, लंगड़े, अंधे, रोगी आदि तथा स्त्रियों के लिए जमात से पढ़ना अनिवार्य नहीं है वह अपने घर ही पर पढ़ सकते हैं। पाँचों समय की नमाज़ों के समय की सूचना के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिक्षा दी कि निम्नलिखित अ़रबी बोलों को ज़ोर ज़ोर से पुकारा जाये जिससे ईश्वर (अल्लाह) का गुड़गान भी हो जायेगा और मुसलमानो को नमाज़ के समय की सूचना भी मिल जायेगी उन्हीं बोलों को हम अज़ान या बांग कहते हैं (अज़ान के शब्दों की नियुक्त में जो विस्तार है उसको छोड़ कर सारांश लिखा गया है) वह बोल अनुवाद सहित प्रस्तुत हैं:

- अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर = अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है।
- अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर = अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है।
- अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह = मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।
- अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह = मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।
- अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह = मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) हैं।
- अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह = मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) हैं।

- हय्या अलस्सलाह = (मुसलमानो) आओ नमाज़ के लिए।
- हय्या अलस्सलाह = (मुसलमानो) आओ नमाज़ के लिए।
- हय्या अलल फ़लाह = (मुसलमानो) आओ सफलता प्राप्ति के लिए।
- हय्या अलल फ़लाह = (मुसलमानो) आओ सफलता प्राप्ति के लिए।
- अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर = अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है।
- ला इलाह इल्लल्लाह= अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नही।

फज्र की अज़ान में हय्या अलल फ़लाह के बाद दो बोल और पुकारे जाते हैं:–

- अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम = नमाज़ सोने से बेहतर है।
- अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम = नमाज़ सोने से बेहतर है।
- कबीर दास अज़ान के उद्देश्य से अवगत न थे अतः यह दोहा कह डाला।

जगनायक..............

मुसाफिर और परदेसी की बेतमीज़ी और हर तरह के सवाल को सब्र व सुकून के साथ सुनते। यहां तक कि आपके साथी ऐसे लोगों का ध्यान अपनी ओर कर लेते। आप फरमाते थे ''तुम किसी ज़रूरतमंद को पाओ तो उसकी मदद करो'' आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तारीफ उसी व्यक्ति की कुबूल फरमाते जो हद के अन्दर रहता। सिकी की बात के दौरान बात न करते और उसकी बात न काटते। हाँ अगर वह हद से बढ़ने लगता तो उसको रोक देते या मजलिस से खुद उठ जाते और इसी तरह उसकी बात समाप्त कर देते।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे ज़ियादा खुले दिल, सच्ची बात कहने वाले, नर्म तबीअत और मामलात और व्यवहार में बहुत दयालु थे। जो आपको पहली बार देखता उस पर आपका रोब छा जाता और जब आपके साथ रहता और जान पहचान हासिल होती तो वह आपका दिलदादा और फरेफता हो जाता। आपकी तारीफ करने वाला कहता है कि न आपके पहले मैंने आप जैसा कोई व्यक्ति देखा न आपके बाद। "सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम"।

अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मनमोहक हुस्न व जमाल प्रदान किया था और महब्बत व दिलकशी और रोब व हैबत का हसीन व खूबसूरत पैकर बनाया था, हज़रत हिन्द बिन अबी हाला बयान करते हैं ''आप बहुत खुद्दार और शान व शौकत वाले थे और दूसरों की निगाह में भी बहुत शान व शौकत वाले। आपका मुखड़ा चौधवीं रात के चाँद की तरह चमकता था''।

❖❖❖

रब की रिज़ा के वास्ते

इदारा

हो हमारा हर अ़मल रब की रिज़ा के वास्ते
दुशमनी और दोस्ती हों बस खुदा के वास्ते
जब मुअ़ज़्ज़िन दे अज़ाँ तो रुख़ करें मस्जिद का हम
फज्रो जुह्रो अस्रो मग़रिब और इशा के वास्ते
दीन की ख़िदमत करेंगे ख़ल्क़ की ख़िदमत के साथ
काम यह होंगे रिज़ाए किबरिया के वास्ते
ना रहे नाख्वांदा कोई अब हमारे मुल्क में
हम करेंगे यह सई रब से जज़ा के वास्ते
हम करेंगे मेहनत हमेशा, दिल लगा हर काम में
सारी यह मेहनत करें जाइज़ गिज़ा के वास्ते
काम जाइज़ हम करें, हर मअ़सीयत से हम बचें
जो सई भी हम करें, रब्बुलउला के वास्ते
जो भी मुशकिल आए हम पर, सब्र से हम काम लें
और उठाएं हाथ हम, रब से दुआ के वास्ते
या ख़ुदा ओले न बरसें और न आएं ज़लज़ले
हम करें कोशिश सदा अच्छी फ़ज़ा के वास्ते
है वही मुशकिल कुशा और है वही सबका खुदा
उससे मांगे हम दुआ दफ्अ़े बला के वास्ते
ख़ल्क़ के ख़ादिम रहें और हुक्म पर रब के चलें
खेर के तालिब रहें, खल्के खुदा के वास्ते
कल्मः गो भाई हैं सब, बाहम महब्बत सब करें
ना लड़ें आपस में, रब्बे किबरिया के वास्ते
माँगते हैं रब से रहमत और बराबर हम सलाम
मुस्तफा वो मुजतबा, खैरुलवरा के वास्ते
रहमतें रब की उतरती हैं हमेशा हर घड़ी
खैरुल बशर, बदरुद्दुजा नूरुलहुदा के वास्ते

❖❖❖

हो मुबारक ईद सबको

ईद की खुश्यां मनाओ
नग्महाए शुक्र गाओ
दाँत में दातून करके
ठीक से फिर तुम नहाओ
अच्छे अच्छे कपड़े पहनों
जिस्म में खुश्बू लगाओ
पर ग़रीबों को न भूलो
उनके भी तुम काम आओ
अब सिवय्यां या खजूरें
मीठा खाओ और खिलाओ
फिर नमाज़े ईद पढ़ने
बच्चों को ले साथ जाओ
बच्चे हों वह बातमीज़
उनको दोगाना पढ़ाओ
और नमाज़े ईद पढ़ कर
रब के अपने शुक्र गाओ
हो मुबारक ईद सबको
दावतें खाओ खिलाओ
पढ़के दिल से तुम दुरूद
बिछड़ों को बाहम मिलाओ

❖❖❖

पैग़ाम

दुख में आओ सबके काम
हमदर्दी का यह पैग़ाम
हर घर तक पहुँचाना है
लेकर बस अल्लाह का नाम

❖❖❖

खुद को बड़ा दिखाने की चाहत में भटक रहा है आज का इंसान

—रमेश भाई ओझा

—प्रस्तुतिः सुभाष चन्द्र शर्मा

आज के इंसान की यह हालत है कि जीवन के लक्ष्य तक पहुंचना यूं तो कठिन नहीं है, लेकिन लोभ, मोह, अहंकार और ईर्ष्या जीव को उसके जीवन की सीधी और सरल राह से भटका रही है। अपनी क्षमता के अनुसार जिसके पास जितना है उससे वह संतुष्ट नहीं। आज लखपति, कल करोड़पति, फिर अरब पति बनने की चाह में उलझ कर इंसान दौड़ रहा है। अनेक लोग ऐसे हैं जिनके पास सब कुछ है। भरा—पूरा परिवार, कोठी, बंगला, एक से एक बढ़िया कारें, क्या कुछ नहीं है। फिर भी उनमें बहुत से दुखी रहते हैं।

बड़ा आदमी बनना, धनवान बनना बुरी बात नहीं, बनना चाहिए। यह हसरत सबकी रहती है। उसके लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होगी तो थकान नहीं होगी। लेकिन दूसरों के सामने खुद को बड़ा दिखाने की चाह के चलते आदमी राह से भटक रहा है और यह भटकाव ही इंसान को थका रहा है?

यह लक्ष्य प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा है। जीवन के सही लक्ष्य को पाने को मिली ऊर्जा को आज का इंसान बर्बाद करता जा रहा है। मोह, लोभ, अहंकार और ईर्ष्या से बचकर लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में सीधे—सीधे आगे बढ़ते रहे तो फिर एक दिन उसे मंजिल मिल ही जाएगी। लेकिन इनके चक्कर में पड़ेगा तो वह थक ही जाएगा।

नोटः श्री ओझा जी का यह लेख मैंने पढ़ा, महाशय जी का यह लेख ध्यान देने योग्य है यहां मैं यह भी बताना चाहूंगा कि इस्लाममिक आचरण से एक विशेष गुण की शिक्षा दी जाती है जिसे अरबी भाषा में क़नाअत कहते हैं जिसका अनुवाद हिन्दी में परितुष्टि अथवा सन्तोष से किया जा सकता है परन्तु इस अनुवाद में पूरा अर्थ नहीं आ सकता है, क़नाअत का पूरा अर्थ हैः दुन्या कमाने में अपनी दृष्टि के अनुसार वैध परिश्रम करें, संयमी बुद्धजीवियों के पथ प्रदर्शन को भी अपनाएं कोई शिथिलता अथवा कमी न करें, फिर जो भी प्राप्त हो अधिक अथवा कम उस पर संतुष्ट हों तथा प्रसन्न भी रहें, अत्यधिक का लालच न करें अधिक मिलने पर उस धन में निर्धनों का भाग भी लगायें तथा अन्नय उपकारों में भी व्यय करें कम मिलने पर संतुष्ट तथा प्रसन्न रहें और हर दशा में प्रसन्नता पूर्वक अपने पालनहार की प्रसन्नता के साथ कृतज्ञता प्रकट करें यदि यह गुण लोगों में जागृत हो जाये तो समाज सुख मय हो जाये।

❖❖❖

शिष्टाचार (मुआशरत के आदाब)

—इदारा

शिष्टाचार मानवता का आभूषण है। यह शब्द दो शब्दों के मेल से बना है— शिष्ट+आचार= शिष्टाचार अर्थात अच्छा आचरण। अच्छा आचरण वह है जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का भला होता है।

शिष्टाचार के महान प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा "जिसका आचरण अच्छा नहीं उसका दीन में कुछ हिस्सा नहीं" और क़ियामत के दिन न्याय तुला में उत्तम आचरण सारे सत्कर्मों से भारी होगा।"

जीवन में शिष्टाचार का बहुत महत्व है। प्रत्येक व्यक्ति के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना और उसे मान सम्मान देना और किसी को अकारण कष्ट न पहुंचाना शिष्टाचार है। शिष्ट व्यवहार, मधुर भाषण, विनम्रता, शालीनता, अनुशासन, अतिथि सत्कार, बड़ों का मान सम्मान और छोटों से प्रेम इत्यादि शिष्टाचार के आवश्यक भाग हैं।

किसी सभा में शोर मचाना, किसी वक्ता को अपनी बात कहने का अवसर न देना, बैठे हुए व्यक्ति को उठाकर बैठना, जहां सब लोग बैठे हों वहाँ पैर फैला कर बैठना, विकलांग या निर्बल लोगों का मज़ाक उड़ाना या उन्हें छेड़ना, निर्धनों और असहायों को झिड़कना या हेय समझना, दो आदमियों की बात काट कर बीच में बोल पड़ना, अपनी पसन्द के विरुद्ध बात आने पर गुस्सा या हठधर्मी करना, किसी के घर या दफ़्तर जाने पर अनुमति के बिना वहां की चीज़ों को छूना, उलटना— पलटना या इधर—उधर रखना शिष्टाचार के विरुद्ध है। शिष्ट व्यक्ति इन साब बातों से बचता है।

शिष्ट व्यक्ति अपने बोल एवं व्यवहार से लोगों का मन मोह लेता है और उनका प्रिय पात्र बन जाता है। किसी व्यक्ति की विद्या—बुद्धि और योग्यता का अनुमान उसकी बातचीत से लग जाता है। जीवन की सफलता और असफलता बहुत हद तक बातचीत के ढंग पर निर्भर करती है। लोग मृदुभाषी व्यक्ति से प्रेम और कटुभाषी से घृणा करने लगते हैं। अतः शिष्ट व्यक्ति बातचीत करते समय सावधानी बरतता है और शिष्टाचार— सम्बन्धी छोटी—छोटी बातों पर भी ध्यान देता है।

शिष्ट व्यक्ति की पहचान क्या है? मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने इस सम्बन्ध में कहा है—

"तुममें सबसे अच्छा व्यक्ति वह है, जिसका आचरण सबसे अच्छा है।" आप सल्ल0 ने यह भी कहा— "मैं तुम्हारे बीच उत्तम आचरण की परिपूर्णता के लिए भेजा गया हूँ।"

शिष्ट व्यक्ति की सबसे बड़ी पहचान उसका आचार—व्यवहार है जो वह अपने छोटे—बड़ों, साथी—संगियों, नौकरों, अधीनस्थों, परिजनों, सगे सम्बन्धियों, पड़ोसियों, दीन दुखियों इत्यादि के साथ करता है। विनम्रता और अनुशासन शिष्टाचार का सबसे महत्वपूर्ण

गुण है। शिष्ट व्यक्ति की वाणी और उसके व्यवहार में विनम्रता, अनुशासन तथा शालीनता दूध और मिसरी की भांति घुली–मिली होती है। वह अपने पराये, छोटे बड़े धनी निर्धन सबके साथ विनम्रता और शिष्टाचार का रवैया अपनाता है। उसकी वाणी में मिठास होती है, न कि कटुता और कर्कशता। इससे उसके मान सम्मान में वृद्धि होती है।

शिष्ट व्यक्ति बातचीत करते समय शब्दों के समुचित प्रयोग पर भी ध्यान देता है। बातचीत करते समय वह सिर्फ़ अपनी बातों की झड़ी नहीं लगाता, बल्कि दूसरों को भी बोलने का अवसर देता है। वह किसी की निजी बातों में हस्तक्षेप नहीं करता। यदि किसी व्यक्ति का नाम पूछना हो तो वह 'आपका शुभ नाम' आदि वाक्यांशों का प्रयोग करता है और किसी का नाम लिखते समय यथोचित सम्मान सूचक शब्द अवश्य लिखता है। यदि कोई व्यक्ति कुछ लिख रहा हो तो वह झाँक–झाँक कर उसे पढ़ने की चेष्टा नहीं करता है।

किसी के घर या दफ़्तर जाने पर शिष्ट व्यक्ति अनुमति लेकर अन्दर जाता है, वहां उपस्थित लोगों को सलाम करता है और फिर लौटते समय भी सलाम अवश्य करता है। वह सलाम में पहल करता है।

शिष्टाचार एक ऐसा सम्मोहक और अनोखा व्यवहार है जिससे मनुष्य के व्यक्तित्व में अनुपम सुन्दरता और शालीनता उत्पन्न हो जाती है। शिष्ट व्यक्ति समाज के लिए उपयोगी बन जाता है। शिष्टाचार सोने में सुगन्ध पैदा कर देता है।

जो व्यक्ति शिष्ट होता है, वह अनुकूल–प्रतिकूल प्रत्येक परिस्थिति में शिष्टाचार की रस्सी को मज़बूती से थामे रहता है। उसके यहां जब कोई आता है तो वह प्रसन्नतापूर्वक उसका आदर सत्कार करता है।

किसी के साथ खाना खाते समय शिष्ट व्यक्ति सावधानी बरतता है। वह भोजन करने में अधीरता नहीं दिखाता है। वह ऐसा कभी नहीं करता कि खाने की अच्छी–अच्छी चीज़ें स्वयं चट कर जाए और उसके साथ वाले उन चीज़ों को खाने से वंचित रह जाएं। वह अपने सहयात्रियों का खयाल रखता है, बीमार, बूढ़े, बच्चे और औरतों का तो खास ध्यान रखता है।

एक शिष्ट व्यक्ति इस बात को खूब अच्छी तरह जानता है कि शिष्टाचार मानव जीवन का एक आवश्यक अंग है। यह एक ऐसा नैतिक कर्तव्य है जो व्यक्ति और समाज के सम्बन्ध को प्रगाढ़, प्रेममय और सद्भावपूर्ण बनाता है। शिष्ट व्यक्ति अपने बच्चों को शिष्टाचार के नियमों से अवगत कराता है, क्योंकि शिष्ट बच्चे ही किसी समाज का भविष्य होते हैं और वे आगे चलकर सभ्य और आदर्श नागरिक बनते हैं।

इसीलिए अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा है, "किसी पिता ने अपनी सन्तान को शिष्टाचार से उत्तम कोई उपहार नहीं दिया।"

शिष्टाचार के महत्व पर प्रकाश डालते हुए एक शायर ने भी क्या खूब कहा है–

अदब ही से इन्सान, इनसान है
अदब जो न सीखे वह हैवान है।

❖❖❖

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

उर्दू सीखिये

—इदारा

विभिन्न वाक्य مختلف جملے

उसने सबक याद किया है	اس نے سبق یاد کیا ہے
उस का क़लम क्या हुआ	اس کا قلم کیا ہوا
शकर का नर्ख़ बता	شکر کا نرخ بتا
ख़ुदा की मदद है	خدا کی مدد ہے
ख़ुदा हर तरफ़ है	خدا ہر طرف ہے
बदन को साफ़ रख	بدن کو صاف رکھ
सबक़ ग़लत न पढ़	سبق غلط نہ پڑھ
यह ख़बर ग़लत है	یہ خبر غلط ہے
बहुत न सो	بہت نہ سو
हिरन किधर गया	ہرن کدھر گیا
अ़रब एक मुल्क है	عرب ایک ملک ہے
यह नई सड़क है	یہ نئی سڑک ہے
तू घर से निकल	تو گھر سے نکل
यह किस की जगह है	یہ کس کی جگہ ہے
बौर निकल रहा है	بور نکل رہا ہے
बाप का अदब कर	باپ کا ادب کر
माँ का अदब कर	ماں کا ادب کر
हाँ अब सबक सुना	ہاں اب سبق سنا
घर में भी पढ़ा कर	گھر میں بھی پڑھا کر
यह रंग सुर्ख़ है	یہ رنگ سرخ ہے
जंग का वक़्त है	جنگ کا وقت ہے
यह राह तंग है	یہ راہ تنگ ہے
उसका ढंग बुरा है	اس کا ڈھنگ برا ہے
बाग़ में फूल खिले हैं	باغ میں پھول کھلے ہیں